MEDIA REFLACTION
ON
Bhai ji 3rd Peace Anniversary 2024

27 October 2024

Org. By : National Youth Project

Mahatma Gandhi Seva Ashram, Joura

हमारे भाई जी

1929 - 2021

वार्षिक कैलेन्डर
वर्ष 2025

सत्य। अहिंसा।
न्याय। समानता।

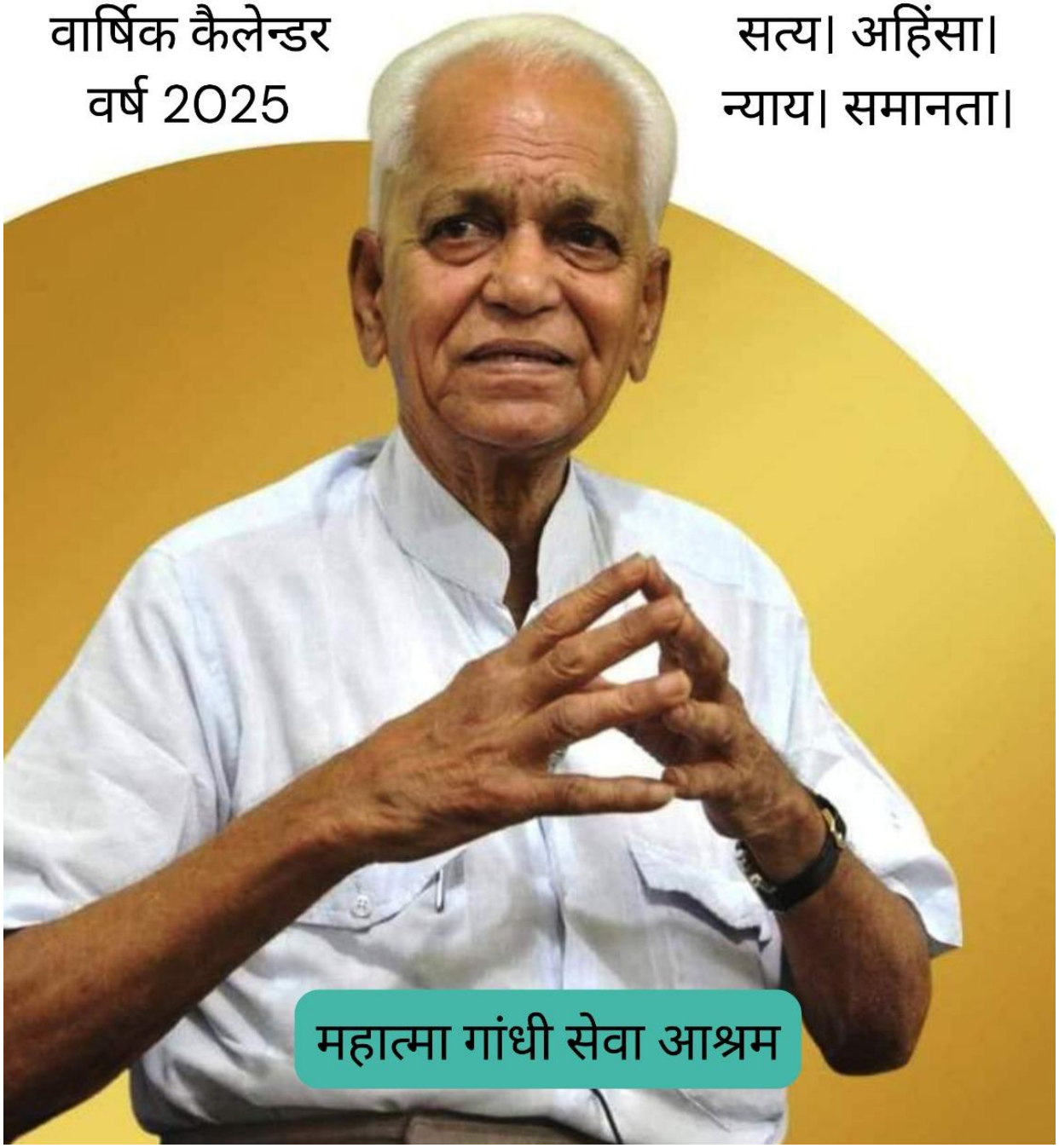

महात्मा गांधी सेवा आश्रम

दैनिक भास्कर
मुरैना 27-10-2024

युवा संस्कार शिविर • सुब्बाराव के आदर्शों से युवा पीढ़ी को संस्कारित करें: परमार

शिविर में 18 राज्यों से आए युवा, लोगों से साझा किए अपने अनुभव

भास्कर संवाददाता | मुरैना

जाने माने गांधीवादी डॉ. एसएन सुब्बाराव की स्मृति में जौरा गांधी आश्रम में इस समय युवाओं का महाकुंभ आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर को युवा संस्कार शिविर का नाम दिया गया है। शिविर में पूरे देश देश से 300 युवा शामिल हुए हैं। सुबह सूर्योदय से पहले ही आश्रम में गतिविधियां शुरू होती हैं और सूर्यास्त तक यह गतिविधियां चलती हैं। जौरा के लिए इस समय यह आयोजन आकर्षण और शिक्षा संस्कार का केंद्र बना हुआ है।

भाई जी डॉ. एसएन सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गांधी आश्रम जौरा में चल रहे राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का शनिवार को दूसरा दिन था। दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आए युवा साथियों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि भाई जी ने देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए युवाओं को मुख्य रूप से चार कार्यक्रम दिए थे, जिनमें श्रम, संस्कार, बहु भाषा सीख, सामूहिक खेल, सर्वधर्म प्रार्थना एवं भारत की संतान की प्रस्तुति राष्ट्र एक दूसरे से जोड़ने में काफी सफल हुई। देश के लगभग सभी राज्यों में राष्ट्रीय युवा योजना के स्वयं सेवक मिल जाए। स्वयं सेवक हर समय सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। शिविर में भाईजी के कार्यक्रमों को देश भर में फैलाने की योजना तैयार करने के लिए देश के 18 राज्यों के युवा मंथन कर रहे हैं।

शिविर में 300 युवा ले रहे हिस्सा, सुबह से शाम तक हो रहीं गतिविधि

शिविर में जुटे युवाओं ने एक-दूसके के अनुभवों को सुना।

यहां से आए स्वयं सेवक

इस राष्ट्रीय शिविर में बिहार से सुनील सेक्क, दिल्ली सुभाष मावी, गुजरात से पंकज झाला, छत्तीसगढ़ से चूड़ामणि, हरियाणा से युद्धवीर, कर्नाटक से प्रशांत कुमार, केरल से मनोज कुमार, महाराष्ट्र से नरेंद्र भाई, राजस्थान से हनुमान, तेलंगाना से यादवराजू, तमिलनाडु से करुणाकरण, उत्तर प्रदेश विश्वात्मा, पश्चिमी बंगाल से सुविधा हित मध्य प्रदेश के 19 जिलों के प्रतिनिधि शामिल हैं। ज्ञात हो कि यह शिविर राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का आयोजन भाई जी डॉ. एसएन सुब्बाराव की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वाधान में किया जा रहा है। शिविर में 3 सौ युवा शामिल हुए, जिन्होंने पूरे देश में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने का संकल्प लिया।

गांधी वीडियो प्रतियोगिता भी आयोजित

इस अवसर पर महात्मा गांधी के संदेश को जनजन तक पहुंचाने के लिए गांधी वीडियो प्रतियोगिता का आयोजन भी राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा किया जा रहा है। इसका उद्देश्य है कि गांधी के बताए सिद्धांतों पर आधारित खुशहाल समाज बनाया जा सके। राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी सुकुमारन ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाई जी के त्याग और देश के लिए समर्पण से प्रेरणा लेने के लिए देश भर के युवाओं को जौरा भाई जी की समाधि के दर्शन करने के लिए अभियान की शुरुआत की जाएगी।

क्या बोले युवा

- फातिमा (तमिलनाडु) ने महिलाओं की भूमिका और उनके सशक्तिकरण पर अपने विचार साझा किए। फातिमा ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि कैसे महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।
- युद्धवीर (हरियाणा) ने युवाओं को सामाजिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। युद्धवीर ने युवाओं को समाज सेवा के महत्व को समझाया और उन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।
- पंकज झाला (गुजरात) ने भाई जी के आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। पंकज ने बताया कि भाई जी के आदर्श हमें एक बेहतर समाज बनाने में मदद कर सकते हैं और हमें उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।
- सुनील सेवक (बिहार) ने शिक्षा और संस्कार के महत्व पर अपने विचार रखे। सुनील ने शिक्षा और अच्छे संस्कारों को जीवन में सफलता और समाज में सम्मान प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण बताया।

■ मध्यप्रदेश ■ राजस्थान ■ छत्तीसगढ़ ■ नई दिल्ली से प्रकाशित

संडे

दैनिक

अजय भारत

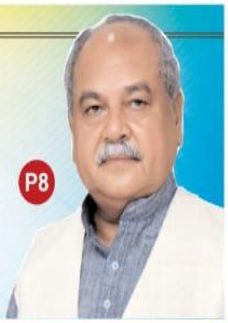

P8

ग्वालियर | रविवार 27 अक्टूबर 2024, वर्ष 12 अंक 7 | www.ajaybharat.com | पेज 8, मूल्य- ₹ 2 रूपये

स्व. एस. एन. सुब्बाराव भाई जी के आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जायेगा : रन सिंह

जौरा। अजय भारत न्यूज़

डॉ. एस एन सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गाँधी आश्रम जौरा मे चल रहे संस्कार शिविर के दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आये युवा साथियों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जा सकता है।

इस अवसर पर शिविर मे अन्य राज्यों से आए हुए युवाओं ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

इस अवसर पर प्रजेषा (केरल) ने भाई जी के आदर्शों और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। प्रेजषा ने बताया कि भाई जी के सिद्धांतों ने उन्हें जीवन में सही दिशा दिखाने में मदद की और उन्होंने हमेशा सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने का प्रयास किया।

सुरेश माबी (दिल्ली) ने युवाओं को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। श्री माबी ने युवाओं को समझाया कि समाज में एकता और भाईचारा बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है और कैसे यह समाज को मजबूत और समृद्ध बना सकता है।

इति मुखरिया उत्तर प्रदेश ने शांति और अहिंसा के महत्व पर जोर दिया। इति ने बताया कि शांति और अहिंसा ही समाज में स्थिरता और विकास का आधार हैं और हमें हमेशा इन मूल्यों को अपनाना चाहिए।

फातिमा (तमिलनाडु) ने महिलाओं की भूमिका और उनके सशक्तिकरण पर अपने विचार साझा किए। फातिमा ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि कैसे महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

युद्धवीर (हरियाणा) ने युवाओं को सामाजिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। युद्धवीर ने युवाओं को समाज सेवा के महत्व को समझाया और उन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

पंकज झाला (गुजरात) ने भाई जी के आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। पंकज ने बताया कि भाई जी के आदर्श हमें एक बेहतर समाज बनाने में मदद कर सकते हैं और हमें उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

सुनील सेवक (बिहार) ने शिक्षा और संस्कार के महत्व पर अपने विचार रखे। सुनील ने शिक्षा और अच्छे संस्कारों को जीवन में सफलता और समाज में सम्मान प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण बताया।

नरेन्द्र भाई (महाराष्ट्र) ने भाई जी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रति समर्पण ओर सम्मान के विषय मे युवाओं को बताते हुए कहा कि हमें अपने मन में अपने देश के राष्ट्रीय ध्वज के प्रति हमेसा सम्मान की भावना रखना चाहिए.

प्रशांत (कर्नाटक) ने प्रशांत ने कहा कि भाई जी द्वारा दिए गए वक्तत्व +एक घंटा देह को एक घंटा देश को + ने मुझे बहुत प्रभावित किया मे आज सभी युवाओं से आह्वान करता हूं कि वह भी इस वक्तत को अपने जीवन मे उतारे.

लमकोटी (उत्तराखण्ड) ने कहा कि उन्होंने भाई जी से प्रेरणा लेकर कई रक्तदान शिविर के आयोजन किए जो कि निरंतर जारी है इन्होंने युवाओ को दुसरो के कठिन समय मे सहयोग देने के लिए प्रेरित किया ।

मोहन (नेपाल) से पहली बार भाई जी से जुड़े कार्यक्रम मे भाग लेने आए ओर भाई जी के प्रति युवाओ के जुडाव को देखकर काफी प्रभावित हुए ।

वीरपाल सिंह (राजस्थान) ने कहा कि भाई जी के दिखाए रास्ते पर चलकर समाज से ऊंच नीच जैसी कुरीतियों को दूर किया जा सकता हैं आज युवाओं को जाति धर्म से आगे बढ़ कर एकजुट रहने कि आवश्कता है ।

ज्ञात हो कि यह शिविर राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का आयोजन भाई जी (डॉ. एस.एन. सुब्बाराव) की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वाधान में किया जा रहा हैं । इस शिविर में 18 राज्यों के लगभग तीन सौ युवा शामिल हुए, जिन्होंने पूरे देश में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने का संकल्प लिया।

प्रबंधक प्रफुल्ल कुमार श्रीवास्तव ने बताया आज 27 अक्टूबर रविवार को भी महात्मा गांधी सेवा आश्रम में कार्यक्रम हुए ।

गया। जहां पुलिस ने रामभरोसे की फरियाद पर मामला दर्ज कर रही है। चयन किया गया।

भाईजी ने दस्यु पीड़ित चंबल की पहचान खत्म करने का काम किया : रामू तोमर

जौरा गांधी सेवा आश्रम में मनाई गई गांधीवादी सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि

एसएन सुब्बाराव की तस्वीर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते अतिथि व आयोजक। ● नईदुनिया

नईदुनिया न्यूज, जौरा: प्रख्यात गांधीवादी विचारक डा. एसएन सुब्बाराव 'भाईजी' की तृतीय पुण्य तिथि रविवार को जौरा के गांधी सेवा आश्रम में मनाई गई, जिसमें देशभर से आए लोगों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्वभर के नौजवानों को एकता, बंधुत्व और प्रेम की सीख दी है। जौरा नप अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने जौरा नगर में एक मार्ग का नाम भाईजी के नाम पर रखने और आश्रम के पास स्थित पार्क में प्रतिमा लगाने की घोषणा की।

आयोजन में भारतीय हाकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष रामू तोमर ने कहा कि दीन-दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का काम भाईजी ने बागियों के सामूहिक आत्मसमर्पण से किया, जब उन्होंने 654 डकैतों का हृदय परिवर्तन करके हथियार फिंकवाए। रामू सिंह तोमर ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में दो हजार नौजवानों के लिए ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर की इच्छा जाहिर की। उत्तर प्रदेश से आए विश्वात्मा ने कहा कि भाई जी राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे। महाराष्ट्र के नरेंद्र ने कहा कि युवा और बच्चों को संस्कार देकर भारत माता की सेवा का व्रत लिया था। सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाई को चम्बल में शांति का दूत बताया। आंध्रप्रदेश से आयी जुबैदा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि भाईजी भाषायी बाधाओं को पार कर सभी भाषाओं और धर्मग्रंथो की जानकारी रखते थे। आयोजन में गांधी आश्रम के प्रबंधक प्रफुल्ल श्रीवास्तव, डोंगर शर्मा, दीपक अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

भाईजी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणास्रोतः परमार

स्व. सुब्बाराव की पुण्यतिथि पर युवा संस्कार शिविर आयोजित

पीपुल्स संवाददाता ● जौरा
editor@peoplessamachar.co.in

डॉ एसएन सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि पर गांधी आश्रम जौरा में चल रहे युवा संस्कार शिविर के दूसरे दिन शनिवार को देश के 18 राज्यों से आए युवाओं को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाईजी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जा सकता है। इस अवसर पर प्रजेषा केरल ने कहा कि भाईजी के सिद्धांतों ने उन्हें सही दिशा दिखाने में मदद की। सुरेश मांझी दिल्ली ने युवाओं को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। इति मुखरिया ने बताया कि शांति और अहिंसा ही समाज में स्थिरता और विकास का आधार है, हमें हमेशा इन मूल्यों को अपनाना चाहिए। तमिलनाडु से आई फातिमा ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया। युद्धवीर ने युवाओं को समाजसेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। गुजरात से आए पंकज झाला ने कहा कि भाईजी के आदर्श हमें बेहतर समाज बनाने में मदद कर सकते हैं। सुनील सेवक बिहार ने शिक्षा और संस्कार के महत्व पर अपने विचार रखे। कर्नाटक से आए प्रशांत ने बताया कि भाईजी के संदेश 'एक घंटा देह को एक घंटा देश को' ने मुझे बहुत प्रभावित किया। नेपाल से आए मोहन ने कहा कि वह भाईजी के प्रति युवाओं के जुड़ाव को देखकर काफी प्रभावित हुए। राजस्थान के वीरपाल सिंह ने कहा कि आज युवाओं को जाति, धर्म से आगे बढ़कर एकजुट रहने की आवश्यकता है।

गांधीजी के जीवन का मूलमंत्र सत्य और अहिंसा था उन्होंने हमेशा सत्य बोलने और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी : के सुकुमारन

एक्सल समाचार, जौरा। राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा स्वर्गीय भाईजी डॉ एस एन सुब्बाराव जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर 25 से 27 अक्टूबर तक जौरा में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय बैठक का शुभारम्भ आज भाई जी के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया गया.उक्त बैठक के उद्देश्य के विषय मे राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी श्री के सुकुमारन जी ने बताया कि इस बैठक का उद्देश्य गांधी दर्शन को सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित और प्रसारित करना है जिससे गाँधी जी के बताए सत्य अहिंसा के विचारों को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके।

» गाँधी आश्रम जौरा मे राष्ट्रीय युवा योजना की राष्ट्रीय बैठक का हुआ शुभारम्भ

दो दिन चलने वाली इस बैठक के पहले दिन देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने अपने विचार साझा किए।

कर्नाटक राज्य से आए प्रशांत कुमार ने गांधीजी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि कैसे गांधीजी ने अहिंसा को अपने जीवन का मूलमंत्र बनाया और सत्याग्रह के माध्यम से अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी। प्रशांत ने युवाओं को प्रेरित किया कि वे भी अपने जीवन में अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को अपनाएं।

तमिलनाडु से आए करुणाकरण ने गांधीजी के स्वदेशी आंदोलन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि स्वदेशी आंदोलन ने न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत किया बल्कि आत्मनिर्भरता की भावना को भी बढ़ावा दिया। करुणाकरण ने युवाओं को स्वदेशी उत्पादों के उपयोग के लिए प्रेरित किया।

बिहार से आए सुनील सेवक ने युवाओं को गांधीजी के विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि गांधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। सुनील ने युवाओं को सत्य, अहिंसा, और स्वराज के सिद्धांतों को अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रेरित किया।

तेलंगाना से यादवराजू ने गांधीजी के ग्राम स्वराज के विचार को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कैसे गांधीजी का ग्राम स्वराज का सपना आज के समय में भी महत्वपूर्ण है और इसे आधुनिक तकनीक और संसाधनों के साथ कैसे लागू किया जा सकता है।

दिल्ली से सुभाष माली ने गांधीजी के नेतृत्व गुणों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे गांधीजी ने अपने नेतृत्व से लाखों लोगों को प्रेरित किया और स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुभाष ने युवाओं को गांधीजी के नेतृत्व गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

उत्तर प्रदेश से इति मुखर्रैया ने गांधीजी के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण पर अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि गांधीजी ने शिक्षा को जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना और नैतिक शिक्षा पर जोर दिया। इति ने युवाओं को नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया।

मध्य प्रदेश से दीपक अग्रवाल ने गांधीजी के पर्यावरण संरक्षण के विचारों पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि गांधीजी ने हमेशा प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीने की शिक्षा दी। दीपक ने युवाओं को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया।

जौरा से प्रफुल्ल श्रीवास्तव ने स्थानीय स्तर पर गांधी दर्शन के प्रचार-प्रसार के महत्व पर बल दिया। उन्होंने बताया कि कैसे स्थानीय समुदायों में गांधीजी के विचारों को फैलाकर समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य गांधीजी के विचारों को युवाओं तक पहुंचाना और उन्हें सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक रूप से प्रसारित करना है।

साथ ही इस बैठक में गांधी विचार पर वीडियो स्पीच भी प्रस्तुत की गई जिसमें महात्मा गांधी के जीवन और उनके सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया।वीडियो स्पीच में निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं को शामिल किया गया;

सत्य और अहिंसा- गांधीजी के जीवन का मूलमंत्र सत्य और अहिंसा था। उन्होंने हमेशा सत्य बोलने और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

स्वराज- गांधीजी का स्वराज का सपना, जिसमें हर व्यक्ति आत्मनिर्भर हो और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो।

स्वदेशी आंदोलन- गांधीजी ने स्वदेशी वस्त्रों और उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दिया, जिससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके।

सामाजिक न्याय- गांधीजी ने जातिवाद, छुआछूत और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई और समानता की वकालत की।

पर्यावरण संरक्षण- गांधीजी ने प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीने की शिक्षा दी।

इस वीडियो स्पीच ने उपस्थित युवाओं को गांधीजी के विचारों को गहराई से समझने और उन्हें अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया बैठक का संचालक दीपक अग्रवाल ने किया उक्त बैठक मे गाँधी आश्रम के संचालक प्रफुल्ल श्रीवास्तव, एकता परिषद के प्रांतीय सयोजक डॉगर भाई, रविंद्र सक्सेना, मीडिया सेंटर के कुलदीप तिवारी, शीतल जैन, लक्ष्मीनारायण शर्मा संजय जादौन, सहित आश्रम के सभी कार्यकर्त्ता सम्मलित रहे.

सम्पूर्ण मध्यप्रदेश, राजस्थान, उ.प्र. में तेजी से बढ़ता सांध्य दैनिक

मध्य जनदर्शन

RNI.NO.MPHIN/2003/13131

❛ प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है, परंतु उससे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है।

- हरिऔध

मौसम

	अधि.	न्यून.
ग्वालियर	32.8	15.11
भोपाल	28.7	18.12
इंदौर	26.5	21.0
जबलपुर	27.7	12.0

पेज नं. 2 पर

पेज नं. 8 पर

पेज नं. 7 पर

विज्ञापन

वर्ष : 21, अंक 342 | ग्वालियर, मंगलवार 29 अक्टूबर 2024 | मूल्य 1 रुपया, पृष्ठ 8

भारत की संतान की प्रस्तुति भाईजी को सच्ची श्रद्धांजलिः डॉ. रन सिंह परमार

नरेंद्र भाई के नेतृत्व में एचएल ग्रुप के बच्चों ने दी भारत की संतान कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुति

जौरा। भाईजी संत चरित्र महामानव थे। जौरा को विश्वस्तर पर भाईजी ने एक विशेष पहचान दिलाई है। जौरा की पावन भूमि भाईजी के कृतित्व को हमेशा याद रखेगी। भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर एचएल ग्रुप के दोनों प्रतिष्ठान एचएल बचपन स्कूल और एचएल हायर सेकेंडरी स्कूल के बच्चों ने भारत की संतान कार्यक्रम जो कि भाईजी का प्रिय कार्यक्रम है, प्रस्तुति देखकर भाईजी की यादों को ताजा कर दिया। यह भाईजी को सच्चे अर्थों में श्रद्धांजलि है। यह बात महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव डॉ. रन सिंह परमार ने कही। भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर भाईजी की कर्मभूमि, महात्मा गांधी सेवा आश्रम, जौरा जिला मुरैना मध्य प्रदेश मे राष्ट्रीय युवा योजना देल्ही द्वारा राष्ट्रीय एकता युवा शिविर का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें महाराष्ट्र के नरेंद्र भाई के निर्देशन में 'भारत की संतान' कार्यक्रम की बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति देकर भाईजी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 'भारत की संतान' कार्यक्रम में एचएल हायर सेकेंडरी स्कूल और एचएल बचपन स्कूल के बच्चों ने 'अनेकता में एकता' का सन्देश दिया। इस आयोजन में भारत के 18 प्रांतों के 300 से अधिक युवा प्रतिभागियों ने भागीदारी की, जिसमें शिक्षाविद् एल.एन. त्यागी के मार्गदर्शन में एचएल ग्रुप के बच्चों ने भारत की संतान कार्यक्रम को प्रस्तुत किया। इस अवसर वरिष्ठ समाजसेवी कैलाश मित्तल, एकता परिषद के डॉ. रन सिंह परमार, डोंगर शर्मा, प्रफुल्ल श्रीवास्तव, शीतल जैन, शिक्षाविद् एल. एन. त्यागी, पत्रकार जे.पी. पाराशर, चंद्र मोहन शर्मा, जगदीश शुक्ला, प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के विद्याराम प्रजापति, महेश प्रजापति, हरिओम पाराशर, जितेंद्र त्यागी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

श्योपुर एक्सप्रेस

भाई जी की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर विशेष

भाई जी के आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को सँस्कारित किया जाएगा : रनसिंह परमार

निज संवाददाता

जौरापूज्य भाई जी डॉ एस एन सुब्बाराव जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गाँधी आश्रम जौरा मे चल रहे राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर के दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आए युवा साथियो को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को सस्कारित किय जाएगा।उन्होंने बताया कि भाई जी ने देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए युवाओं को मुख्य रूप से चार कार्यक्रम दिए थे जिनमें श्रम संस्कार,बहु भाषा सीख,सामूहिक खेल,सर्वधर्म प्रार्थना एवं भरत की संतान की प्रस्तुति राष्ट्र एक दूसरे से जोड़ने में काफी सफल हुई।देश के लगभग सभी राज्यों में राष्ट्रीय युवा योजना के स्वयं सेवक मिल जाए हे जो हर समय सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।इन पांचों भाईजी के कार्यक्रमों को देश भर में फैलाने की योजना

इ स अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी श्री सुकुमारन जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाई जी के त्याग और देश के लिए समर्पण से प्रेरणा लेने के लिए देश भर के युवाओं को जौरा भाई जी की समाधि के दर्शन करने के लिए अभियान की शुरुआत की जाएगी।

इस राष्ट्रीय शिविर में बिहार से सुनील तैयार करने के लिए देश के 18 राज्यों के युवा मंथन कर रहे हैं।

इस अवसर पर महात्मा गांधी के संदेश को जनजन तक पहुंचाने के लिए गांधी वीडियो प्रतियोगिता का आयोजन भी राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा किया जा रहा है ताकि गांधी के बताए सिद्धांतों पर आधारित खुशहल समाज बनाया जा सके।

सेवक,दिल्ली सुभाष माची,गुजरात से पंकज झाला,छत्तीसगढ़ से चूड़ामणि जी,हरियाणा से युद्धवीर,कर्नाटक से प्रशांत कुमार,केरल से मनोज कुमार,महाराष्ट्र से नरेंद्र भाई,राजस्थान से हनुमान जी,तेलंगाना से यादवराजू,तमिलनाडु से करुणाकरण,उत्तर प्रदेश विश्वात्मा,पश्चिमी बंगाल से सुविधाहित मध्य प्रदेश के 19 जिलों के प्रतिनिधि शामिल है

ज्ञात हो कि यह शिविर राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का आयोजन भाई जी (डॉ. एस.एन. सुब्बारव) की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वाधान में किया जा रहा है। इस शिविर में 18 राज्यों के लगभग तीन सौ युवा शामिल हुए, जिन्होंने पूरे देश में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने का संकल्प लिया।

की सूचना अफवाह है।

को कहा कि झारखंड में बहन सीता

सच टाइम्स

मुरैना, सोमवार 28 अक्टूबर 2024

देश भर से आए नवजवानों ने किया भाई जी का पुण्य स्मरण

विश्व शांति और बंधुत्व के पैरोकार रहे भाई जी

जौरा (निज संवाददाता)। स्वर्गीय डा एस एन सुब्बाराव भाई जी की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर देश भर से आए नवजवानों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव डॉ रन सिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्व के नवजवानों को एकता, बंधुत्व और प्रेम के लिए अपने आचरण और व्यक्तव्य से जागरूक और प्रेरित करने के साथ ही चम्बल को बागी समस्या से मुक्त कराया था।

भारतीय हाकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह तोमर (रामू भैया) ने कहा कि भाई जी के विचारों को आत्मसात करके उनके अधूरे कार्यों को लेकर आगे बढ़ना ही भाई जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। दिन दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का कार्य भेजी ने बागी आत्मसमर्पण करके किया। जब उन्होंने 654 बागी डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया। रामू सिंह तोमर ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में 2 हजार नवजवानों का ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजन की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर पूरे देश भर से आए नवजवानों और भाई जी से प्रेरित लोगों ने अपने अपने स्मरण सुनाकर भाई जी को याद किया। राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी सुकुमारन ने कहा कि जौरा में भाई ने जो कार्य किया है उससे जौरा का नाम एक शांति पर्यटक स्थल के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। उत्तर प्रदेश से आए विश्वात्मा जी ने कहा कि भाई जी राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे। महाराष्ट्र के नरेंद्र ने कहा कि नवजवानों और बच्चों को संस्कार देकर भारत माता की सेवा का व्रत लिया था। वरिष्ठ पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाई को चम्बल में शांति का दूत बताया। आंध्राप्रदेश से आयी जुबेदा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि भाई जी भाषायी बाधाओं को पार कर सभी भाषाओं और धर्मग्रंथो की जानकारी रखते थे। बिहार से आये सुनिल सेवक ने कहा कि भाई जी ने लाखों नवजवानों में राष्ट्रीय एकता के बीज का रोपण किया था। छत्तीसगढ से आये चूड़ामणि ने कहा कि समाज कार्य के लिए भाई जी ने लाखों नवजवानों को प्रेरित किया। दिल्ली से आये सुभाषमवि ने कहा कि देश में आपदाकाल के दौरान भाई जी ने हमेशा देश भर के नवजवानों को एकत्र करके पीडित मानवता के लिए सेवा की और दूसरों को प्रेरित किया। गुजरात से आये पंकज झाला ने कहा कि भाई जी पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक देश के कोने कोने में नवजवानों को नेतृत्व प्रदान किया। राजस्थान से आये हनुमान शर्मा ने कहा कि भारत माता के सच्चे सपूत भाई जी ने राजस्थान में सूखा से निपटने के लिए कई तालाबो और जलाशयों को हजारों नवजवानों के साथ श्रमदान के माध्यम से जल संरक्षण का कार्य किया जिसे आज भी लोग याद करते हैं। नगर पालिका जौरा के अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने कहा कि जौरा नगर में एक मार्ग का नाम भाई जी के नाम पर रखा गया है जिसका भूमिपुजन राजगोपाल जी के द्वारा किया गया था। नगर अध्यक्ष ने आश्रम के बगल में स्थित पार्क में भाई जी की मूर्ति लगाने की घोषणा की। इसके बाद नरेंद्र भाई और सुनील सेवक ने मिलकर संयुक्त प्रेरणा गीत गाकर लोगों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर भाई जी से जुड़े कार्यों की छाया चित्र पर 2025 साल का वार्षिक कैलेंडर का विमोचन किया गया। आश्रम के प्रांगण में सामाजिक कार्यों से जुडे कार्यो पर आधारित प्रदर्शनी भी लगायी गयी। इस अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय शिविर में आये नवजवानों के द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया और भाई जी की समाधि स्थल पर फूल अर्पित किया गया। शिविर में आंध्राप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना से आये शिविरार्थियों ने भी अपने विचार रखें। ज्ञात हो कि इस शिविर में पूरे मध्यप्रदेश के 18 जिलों से भी युवक युवतियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में शिक्षाविद् एल.एन.त्यागी के नेतृत्व में उनके विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन में प्रफुल्ल श्रीवास्तव, डोंगर शर्मा, दीपक अग्रवाल, नरेश, संतोष सिंह, अनिल गुप्ता, दीलिप जैन, योगेश कुमार, लक्ष्मीनारायण शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

भाईजी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणास्त्रोतः परमार

स्व. सुब्बाराव की पुण्यतिथि पर युवा संस्कार शिविर आयोजित

पीपुल्स संवाददाता ● जौरा
editor@peoplessamachar.co.in

डॉ एसएन सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि पर गांधी आश्रम जौरा में चल रहे युवा संस्कार शिविर के दूसरे दिन शनिवार को देश के 18 राज्यों से आए युवाओं को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाईजी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जा सकता है। इस अवसर पर प्रजेषा केरल ने कहा कि भाईजी के सिद्धांतों ने उन्हें सही दिशा दिखाने में मदद की। सुरेश मावी दिल्ली ने युवाओं को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। इति मुखरिया ने बताया कि शांति और अहिंसा ही समाज में स्थिरता और विकास का आधार है, हमें हमेशा इन मूल्यों को अपनाना चाहिए। तमिलनाडु से आईं फातिमा ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया। युद्धवीर ने युवाओं को समाजसेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। गुजरात से आए पंकज झाला ने कहा कि भाईजी के आदर्श हमें बेहतर समाज बनाने में मदद कर सकते हैं। सुनील सेवक बिहार ने शिक्षा और संस्कार के महत्व पर अपने विचार रखे। कर्नाटक से आए प्रशांत ने बताया कि भाईजी के संदेश 'एक घंटा देह को एक घंटा देश को' ने मुझे बहुत प्रभावित किया। नेपाल से आए मोहन ने कहा कि वह भाईजी के प्रति युवाओं के जुड़ाव को देखकर काफी प्रभावित हुए। राजस्थान के वीरपाल सिंह ने कहा कि आज युवाओं को जाति, धर्म से आगे बढ़कर एकजुट रहने की आवश्कता है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 अफ्रीका दौरे के लिए भारतीय टीम के कोच लक्ष्मण नियुक्त | सम्पादकीय क्या उपराज्यपाल को अपनी ही जिम्मेदारी का | दिवाली से पहले शेयर बाजार में लौटी रौनक 5

वर्ष 18 ● अंक 252 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online | भोपाल, मंगलवार 29 अक्टूबर 2024 | email - hindustanexpressbhopal@Gmail.com, hindustanexpresshe@Gmail.com | मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

भारत की संतान की प्रस्तुति भाई जी को सच्ची श्रद्धांजलि : डॉ. परमार

- नरेंद्र भाई के नेतृत्व में एचएल ग्रुप के बच्चों ने दी भारत की संतान कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुति

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। भाई जी संत चरित्र महामानव थे, जौरा को विश्वस्तर पर भाईजी ने एक विशेष पहचान दिलाई है। जौरा की पावन भूमि भाईजी के कृतित्व को हमेशा याद रखेगी। भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर एचएल ग्रुप के दोनों प्रतिष्ठान एचएल बचपन स्कूल और एचएल हायर सेकेंडरी स्कूल के बच्चों ने भारत की संतान कार्यक्रम जो कि भाईजी का प्रिय कार्यक्रम है, प्रस्तुति देखकर भाईजी की यादों को ताजा कर दिया। यह भाईजी को सच्चे अर्थों में श्रद्धांजलि है। यह बात महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव डॉ. रन सिंह परमार ने कही। भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर भाईजी की कर्मभूमि, महात्मा गांधी सेवा आश्रम, जौरा जिला मुरैना मध्य प्रदेश मे राष्ट्रीय युवा योजना देल्ही द्वारा राष्ट्रीय एकता युवा शिविर का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें महाराष्ट्र के नरेंद्र भाई के निर्देशन में 'भारत की संतान' कार्यक्रम की बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति कर भाईजी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

'भारत की संतान' कार्यक्रम में एचएल हायर सेकेंडरी स्कूल और एचएल बचपन स्कूल के बच्चो ने 'अनेकता में एकता' का सन्देश दिया। इस आयोजन में भारत के 18 प्रांतों के 300 से अधिक युवा प्रतिभागियों ने भागीदारी की, जिसमें शिक्षाविद् एलएन त्यागी के मार्गदर्शन में एचएल ग्रुप के बच्चों ने भारत की संतान कार्यक्रम को प्रस्तुत किया। इस अवसर वरिष्ठ समाजसेवी कैलाश मित्तल, एकता परिषद के डॉ. रन सिंह परमार, डोंगर शर्मा, प्रफुल्ल श्रीवास्तव, शीतल जैन, शिक्षाविद् एलएन त्यागी, पत्रकार जेपी पाराशर, चंद्रमोहन शर्मा, जगदीश शुक्ला प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के विद्याराम प्रजापति, महेश प्रजापति, हरिओम पाराशर, जितेंद्र त्यागी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

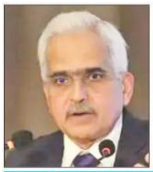

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 5 क्रिप्टोकरेंसी फाइनेंशियल स्टेबिलिटी के सम्पादकीय पचास के दशक में शुरू हुआ आईसीआईसीआई बैंक का दूसरी तिमाही में 14 5

वर्ष 18 ● अंक 250 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online भोपाल, रविवार 27 अक्टूबर 2024 email - hindustanexpressbhopal@Gmail.com, hindustanexpresshe@Gmail.com मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

भाई जी के आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जाएगा : रनसिंह परमार

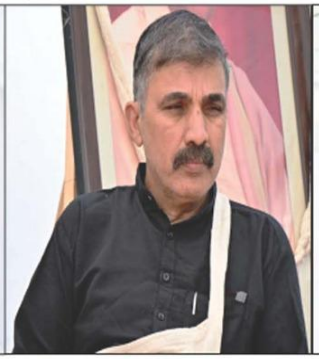

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। डॉ. एस.एन. सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गाँधी आश्रम जौरा मे चल रहे संस्कार शिविर के दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आए युवा साथियों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जा सकता है।

इस अवसर पर शिविर में अन्य राज्यों से आए हुए युवाओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए:

प्रजेषा (केरल): भाई जी के आदर्शों और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। प्रेजषा ने बताया कि भाई जी के सिद्धांतों ने उन्हें जीवन में सही दिशा दिखाने में मदद की और उन्होंने हमेशा सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने का प्रयास किया।

सुरेश मावी (दिल्ली): युवाओं को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। श्री मावी ने युवाओं को समझाया कि समाज में एकता और भाईचारा बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है और कैसे यह समाज को मजबूत और समृद्ध बना सकता है।

इति मुखरिया उत्तर प्रदेश: शांति और अहिंसा के महत्व पर जोर दिया। इति ने बताया कि शांति और अहिंसा ही समाज में स्थिरता और विकास का आधार हैं और हमें हमेशा इन मूल्यों को अपनाना चाहिए।

फातिमा (तमिलनाडु): महिलाओं की भूमिका और उनके सशक्तिकरण पर अपने विचार साझा किए। फातिमा ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि कैसे महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

युद्धवीर (हरियाणा): युवाओं को सामाजिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। युद्धवीर ने युवाओं को समाज सेवा के महत्व को समझाया और उन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

ज्ञात हो कि यह शिविर राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का आयोजन भाई जी (डॉ. एस.एन. सुब्बाराव) की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वाधान में किया जा रहा हैं । इस शिविर में 18 राज्यों के लगभग तीन सौ युवा शामिल हुए, जिन्होंने पूरे देश में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने का संकल्प लिया। प्रबंधक प्रफुल्ल कुमार श्रीवास्तव ने बताया आज 27 अक्टूबर रविवार को भी महात्मा गांधी सेवा आश्रम में कार्यक्रम होंगे।

आज का सुविचार
माफी मागने से अगर रिश्ते सही होते है।
तो माफी मागने से घबराये नहीं माँग ले।।

लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र व्यू

मध्यप्रदेश का बढ़ता - भरोसा आप सबका

आज का तापमान
अधिकतम 33 डिग्री
न्यूनतम 21 डिग्री

वर्ष: 03, अंक: 360 | मूल्य: 2 रू., पृष्ठ: 8 | ग्वालियर, सोमवार, 28 अक्टूबर 2024

देशभर से आए नवजवानों ने किया भाई जी का पुण्य स्मरण

विश्व शांति और बंधुत्व के पैरोकार रहे भाई

जौरा(स्वतंत्र व्यू)। जौरा स्वर्गीय डा एस एन सुब्बाराव की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर देश भर से आए नवजवानों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रन सिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्व के नवजवानों को एकता, बंधुत्व और प्रेम के लिए अपने आचरण और व्यक्तव्य से जागरूक और प्रेरित करने के साथ ही चम्बल को बागी समस्या से मुक्त कराया था। भारतीय हाकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष रामू तोमर ने कहा कि भाई जी के विचारों को आत्मसात करके उनके अधूरे कार्यों को लेकर आगे बढ़ना ही भाई जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। दिन दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का कार्य भेजी ने बागी आत्मसमर्पण करके किया। जब उन्होंने 654 बागी डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया। रामू सिंह तोमर ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में 2 हजार नवजवानों का ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजन की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर पूरे देश भर से आए नवजवानों

और भाई जी से प्रेरित लोगों ने अपने अपने स्मरण सुनाकर भाई जी को याद किया। राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी सुकुमारन ने कहा कि जौरा में भाई ने जो कार्य किया है उससे जौरा का नाम एक शांति पर्यटक स्थल के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। उत्तर प्रदेश से आए विश्वात्मा जी ने कहा कि भाई जी राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे। महाराष्ट्र के नरेंद्र ने कहा कि नवजवानों और बच्चों को संस्कार देकर भारत माता की सेवा का व्रत लिया था। वरिष्ठ पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाई को चम्बल में शांति का दूत बताया। आंध्राप्रदेश से आयी जुबेदा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि भाई जी भाषायी बाधाओं को पार कर सभी भाषाओं और धर्मग्रंथो की जानकारी रखते थे। बिहार से आये सुनिल सेवक ने कहा कि भाई जी ने लाखों नवजवानों में राष्ट्रीय एकता के बीज का रोपण किया था। छत्तीसगढ़ से आये चूड़ामणि ने कहा कि समाज कार्य के लिए भाई जी ने लाखों नवजवानों को प्रेरित किया। दिल्ली से आये सुभाषमवि ने कहा कि देश में आपदाकाल के दौरान भाई जी ने हमेशा देश भर के नवजवानों को एकत्र करके पीड़ित मानवता के लिए सेवा की और दूसरों को प्रेरित किया। गुजरात से आये पंकज झाला ने कहा कि भाई जी पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक देश के कोने कोने में नवजवानों को नेतृत्व प्रदान किया। राजस्थान से आये हनुमान शर्मा ने कहा कि भारत माता के सच्चे सपूत भाई जी ने राजस्थान में सूखा से निपटने के लिए कई तालाबो और जलाशयों को हजारों नवजवानों के साथ श्रमदान के माध्यम से जल संरक्षण का कार्य किया जिसे आज भी लोग याद करते हैं। नगरपालिका जौरा के अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने कहा कि जौरा नगर में एक मार्ग का नाम भाई जी के नाम पर रखा गया है जिसका भूमिपुजन राजगोपाल जी के द्वारा किया गया था। नगर अध्यक्ष ने आश्रम के बगल में स्थित पार्क में भाई जी की मूर्ति लगाने की घोषणा की। इसके बाद नरेंद्र भाई और सुनील सेवक ने मिलकर संयुक्त प्रेरणा गीत गाकर लोगों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर भाई जी से जुड़े कार्यों की छाया चित्र पर 2025 साल का वार्षिक कैलेंडर का विमोचन किया गया। आश्रम के प्रांगण में सामाजिक कार्यों से जुड़े कार्यों पर आधारित प्रदर्शनी भी लगायी गयी। इस अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय शिविर में आये नवजवानों के द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया और भाई जी की समाधि स्थल पर फूल अर्पित किया गया। शिविर में आंध्राप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना से आये शिविरार्थियों ने भी अपने विचार रखें। ज्ञात हो कि इस शिविर में पूरे मध्यप्रदेश के 18 जिलों से भी युवक युवतियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में शिक्षाविद् एल.एन.त्यागी के नेतृत्व में उनके विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन में प्रफुल्ल श्रीवास्तव, शीतल जैन, डोंगर शर्मा, दीपक अग्रवाल, नरेश, संतोष सिंह, अनिल गुप्ता, दीलिप जैन, योगेश कुमार, लक्ष्मीनारायण शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कार्यक्रम के समापन पर आभार व्यक्त करते हुए महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव डॉक्टर रन सिंह परमार ने कहा कि आज हम सब जिस मुकाम पर खड़े हैं वह निश्चित रूप से सब भाई जी की देन है कि देश विदेश से गांधी वादी विचारक एवं अन्य लोग भाई जी की पुण्यतिथि पर जौरा के इस गांधी आश्रम में आए। यहां पर पूर्व विधायक महेश दत्त मिश्र वरिष्ठ पत्रकार जगदीश शुक्ला समाजसेवी कैलाश मित्तल पत्रकार जे पी पाराशर, चंद्रमोहन शर्मा एडवोकेट दिनेश सिंह सिकरवार अवधेश सिंह सिकरवार गिर्राज शर्मा सहित अन्य समाज सेवी नागरिक उपस्थित रहे।

भाई जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का लिया संकल्प

» देश भर से आए नवजवानों ने किया भाई जी का पुण्य स्मरण

एक्सल समाचार,जौरा। विश्व शांति और बंधुत्व के पैरोकार रहे भाई जी जौरा। स्वर्गीय डा एस एन सुब्बाराव भाई जी की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर देश भर से आए नवजवानों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव डॉ रन सिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्व के नवजवानों को एकता, बंधुत्व और प्रेम के लिए अपने आचरण और व्यक्तव्य से जागरूक और प्रेरित करने के साथ ही चम्बल को बागी समस्या से मुक्त कराया था।

भारतीय हाकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह तोमर (रामू भैया) ने कहा कि भाई जी के विचारों को आत्मसात करके उनके अधूरे कार्यों को लेकर आगे बढ़ना ही भाई जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। दिन दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का कार्य भैजी ने बागी आत्मसमर्पण करके किया। जब उन्होंने 654 बागी डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया। रामू सिंह तोमर ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में 2 हजार नवजवानों का ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजन की इच्छा जाहिर की।

इस अवसर पर पूरे देश भर से आए नवजवानों और भाई जी से प्रेरित लोगों ने अपने अपने स्मरण सुनाकर भाई जी को याद किया। राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी सुकुमारन ने कहा कि जौरा में भाई ने जो कार्य किया है उससे जौरा का नाम एक शांति पर्यटक स्थल के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। उत्तर प्रदेश से आए विश्वात्मा जी ने कहा कि भाई जी राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे। महाराष्ट्र के नरेंद्र ने कहा कि नवजवानों और बच्चों को संस्कार देकर भारत माता की सेवा का व्रत लिया था। वरिष्ठ पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाई को चम्बल में शांति का दूत बताया। आंध्राप्रदेश से आयी जुबेदा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि भाई जी भाषायी बाधाओं को पार कर सभी भाषाओं और धर्मग्रंथो की जानकारी रखते थे। बिहार से आये सुनिल सेवक ने कहा कि भाई जी ने लाखों नवजवानों में राष्ट्रीय एकता के बीज का रोपण किया था। छत्तीसगढ़ से आये चूड़ामणि ने कहा कि समाज कार्य के लिए भाई जी ने लाखों नवजवानों को प्रेरित किया। दिल्ली से आये सुभाषमवि ने कहा कि देश में आपदाकाल के दौरान भाई जी ने हमेशा देश भर के नवजवानों को एकत्र करके पीडित मानवता के लिए सेवा की और दूसरों को प्रेरित किया। गुजरात से आये पंकज झाला ने कहा कि भाई जी पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक देश के कोने कोने में नवजवानों को नेतृत्व प्रदान किया। राजस्थान से आये हनुमान शर्मा ने कहा कि भारत माता के सच्चे सपूत भाई जी ने राजस्थान में सूखा से निपटने के लिए कई तालाबो और जलाशयों को हजारों नवजवानों के साथ श्रमदान के माध्यम से जल संरक्षण का कार्य किया जिसे आज भी लोग याद करते हैं। नगर पालिका जौरा के अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने कहा कि जौरा नगर में एक मार्ग का नाम भाई जी के नाम पर रखा गया है जिसका भूमिपुजन राजगोपाल जी के द्वारा किया गया था। नगर अध्यक्ष ने आश्रम के बगल में स्थित पार्क में भाई जी की मूर्ति लगाने की घोषणा की।

इसके बाद नरेंद्र भाई और सुनील सेवक ने मिलकर संयुक्त प्रेरणा गीत गाकर लोगों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर भाई जी से जुड़े कार्यों की छाया चित्र पर 2025 साल का वार्षिक कैलेंडर का विमोचन किया गया। आश्रम के प्रांगण में सामाजिक कार्यों से जुडे कार्यो पर आधारित प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

इस अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय शिविर में आये नवजवानों के द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया और भाई जी की समाधि स्थल पर फूल अर्पित किया गया। शिविर में आंध्राप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़ दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडू उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना से आये शिविरार्थियों ने भी अपने विचार रखें। ज्ञात हो कि इस शिविर में पूरे मध्यप्रदेश के 18 जिलों से भी युवक युवतियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में शिक्षाविद् एल.एन.त्यागी के नेतृत्व में उनके विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन में प्रफुल्ल श्रीवास्तव, डोंगर शर्मा, दीपक अग्रवाल, नरेश, संतोष सिंह, अनिल गुप्ता, दीलिप जैन, योगेश कुमार, लक्ष्मीनारायण शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

गांधीजी के जीवन का मूलमंत्र सत्य और अहिंसा था उन्होंने हमेशा सत्य बोलने और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी : के सुकुमारन

गाँधी आश्रम जौरा मे रास्ट्रीय युबा योजना की रास्ट्रीय बैठक का हुआ सुभारम्भ

जौरा- राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा स्वर्गीय भाई जी डॉ एस एन सुब्बराव जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर 25 से 27 अक्टूबर तक जौरा में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय बैठक का सुभारम्भ आज भाई जी के चित्र पर दीप प्रजलित कर किया गया.उक्त बैठक के उद्देश्य के विषय मे रास्ट्रीय युबा योजना के ट्रस्टी श्री के सुकुमारन जी ने बताया कि इस बैठक का उदेश्य गांधी दर्शन को सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित और प्रसारित करना हैं जिससे गाँधी जी के बताए सत्य अहिंसा के बिचारो को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके। दो दिन चलने बाली इस बैठक के पहले दिन देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने अपने विचार साझा किए

माध्यम से अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट सराहना की।

डा. सुब्बाराव के आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जाएगा : परमार

गांधी सेवा आश्रम में चल रही तीन दिवस राष्ट्रीय युवा योजना की बैठक में कहा

नईदुनिया न्यूज, जौरा : गांधीवादी विचारक डा. एसएन सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गांधी सेवा आश्रम जौरा में चल रहे संस्कार शिविर के दूसरे दिन शनिवार को देश के 18 राज्यों से आए युवाओं को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि डा. एसएन सुब्बाराव देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जा सकता है।

इस अवसर पर शिविर में अन्य राज्यों से आए हुए युवाओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जिसमें केरल के प्रजेषा ने कहा कि भाईजी के आदर्शों और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने की बात कही। दिल्ली के सुरेश मावी ने युवाओं को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। मावी ने युवाओं को समझाया कि समाज में एकता और भाईचारा बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है और कैसे यह समाज को मजबूत और समृद्ध बना सकता है। इसी तर उत्तरप्रदेश के इति मुखरिया, तमिलनाड़ की फातिमा, हरियाणा के युद्धवीर, गुजरात के पंकज झाला, बिहार के सुनील सेवक सहित अन्य ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान गांधी सेवा आश्रम के प्रबंधक प्रफुल्ल कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि रविवार को भी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

युवा संस्कार कार्यक्रम में मौजूद युवा व राष्ट्रीय युवा योजना के पदाधिकारी। ● नईदुनिया

सेम्पलिंग कर रहे है।

देशभर से आए नवजवानों ने किया भाई जी का पुण्य स्मरण

विश्व शान्ति और बन्धुत्व के पैरोकार रहे भाई जी

जौरा

स्वर्गीय डा एस एन सुब्बाराव की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर देश भर से आए नवजवानों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रन सिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्व के नवजवानों को एकता, बंधुत्व और प्रेम के लिए अपने आचरण और व्यक्तव्य से जागरूक और प्रेरित करने के साथ ही चम्बल को बागी समस्या से मुक्त कराया था।भारतीय हाकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष श्री रामू तोमर ने कहा कि भाई जी के विचारों को आत्मसात करके उनके अधूरे कार्यों को लेकर आगे बढ़ना ही भाई जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। दिन दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का कार्य भेजी ने बागी आत्मसमर्पण करके किया। जब उन्होंने 654 बागी डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया। रामू सिंह तोमर ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में 2 हजार नवजवानों का ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजन की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर पूरे देश भर से आए नवजवानों और भाई जी से प्रेरित लोगों ने अपने अपने स्मरण सुनाकर भाई जी को याद किया। राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी सुकुमारन ने कहा कि जौरा में भाई ने जो कार्य किया है उससे जौरा का नाम एक शांति पर्यटक स्थल के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। उत्तर प्रदेश से आए विश्वात्मा जी ने कहा कि भाई जी राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे।

गांधी आश्रम में देश-विदेश से आए गांधीवादी विचारक

महाराष्ट्र के नरेंद्र ने कहा कि नवजवानों और बच्चों को संस्कार देकर भारत माता की सेवा का व्रत लिया था। वरिष्ठ पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाई को चम्बल में शांति का दूत बताया। आंध्राप्रदेश से आयी जुबेदा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि भाई जी भाषायी बाधाओं को पार कर सभी भाषाओं और धर्मग्रंथो की जानकारी रखते थे। बिहार से आये सुनिल सेवक ने कहा कि भाई जी ने लाखों नवजवानों में राष्ट्रीय एकता के बीज का रोपण किया था। छत्तीसगढ से आये चुडामणि ने कहा कि समाज कार्य के लिए भाई जी ने लाखों नवजवानों को प्रेरित किया। दिल्ली से आये सुभाषमवि ने कहा कि देश में आपदाकाल के दौरान भाई जी ने हमेशा देश भर के नवजवानों को एकत्र करके पीड़ित मानवता के लिए सेवा की और दूसरों को प्रेरित किया। गुजरात से आये पंकज झाला ने कहा कि भाई जी पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक देश के कोने कोने में नवजवानों को नेतृत्व प्रदान किया। राजस्थान से आये हनुमान शर्मा ने कहा कि भारत माता के सच्चे सपूत भाई जी ने राजस्थान में सूखा से निपटने के लिए कई तालाबों और जलाशयों को हजारों नवजवानों के साथ श्रमदान के माध्यम से जल संरक्षण का कार्य किया जिसे आज भी लोग याद करते हैं। नगरपालिका जौरा के अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने कहा कि जौरा नगर में एक मार्ग का नाम भाई जी के नाम पर रखा गया है जिसका भूमिपुजन राजगोपाल जी के द्वारा किया गया था। नगर अध्यक्ष ने आश्रम के बगल में स्थित पार्क में भाई जी की मूर्ति लगाने की घोषणा की। इसके बाद नरेंद्र भाई और सुनील सेवक ने मिलकर संयुक्त प्रेरणा गीत गाकर लोगों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर भाई जी से जुड़े कार्यों की छाया चित्र पर 2025 साल का वार्षिक कैलेंडर का विमोचन किया गया। आश्रम के प्रांगण में सामाजिक कार्यों से जुडे कार्यों पर आधारित प्रदर्शनी भी लगायी गयी।इस अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय शिविर में आये नवजवानों के द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया और भाई जी की समाधि स्थल पर फूल अर्पित किया गया। शिविर में आंध्राप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना से आये शिविरार्थियों ने भी अपने विचार रखें। ज्ञात हो कि इस शिविर में पूरे मध्यप्रदेश के 18 जिलों से भी युवक युवतियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में शिक्षाविद् एल.एन.त्यागी के नेतृत्व में उनके विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन में प्रफुल्ल श्रीवास्तव, शीतल जैन, डोंगर शर्मा, दीपक अग्रवाल, नरेश, संतोष सिंह, अनिल गुप्ता, दीलिप जैन, योगेश कुमार, लक्ष्मीनारायण शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कार्यक्रम के समापन पर आभार व्यक्त करते हुए महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव डॉक्टर रन सिंह परमार ने कहा कि आज हम सब जिस मुकाम पर खड़े हैं वह निश्चित रूप से सब भाई जी को देन है कि देश विदेश से गांधी वादी विचारक एवं अन्य लोग भाई जी की पुण्यतिथि पर जौरा के इस गांधी आश्रम में आए। यहां पर पूर्व विधायक महेश दत्त मिश्र वरिष्ठ पत्रकार जगदीश शुक्ला समाजसेवी कैलाश मित्तल पत्रकार जे पी पाराशर , चंद्रमोहन शर्मा एडवोकेट दिनेश सिंह सिकरवार अवधेश सिंह सिकरवार गिरीश शर्मा सहित अन्य समाज सेवी नागरिक उपस्थित रहे ।

दैनिक भास्कर
मुरैना 28-10-2024

डॉ. सुब्बाराव ने 654 डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया

डॉ. एसएन सुब्बाराव की तृतीय पुण्य तिथि गांधी सेवा आश्रम में मनाई गई

भास्कर संवाददाता | जौरा

विश्व शांति और बंधुत्व के पैरोकार रहे भाई जी स्वर्गीय डॉ एसएन सुब्बाराव की तृतीय पुण्य तिथि गांधी सेवा आश्रम में मनाई गई। इस अवसर पर देश भर से आए नवजवानों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव डॉ रन सिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्व के नवजवानों को एकता में बांधा और चंबल को बागी समस्या से मुक्त कराया। इस अवसर पर भारतीय हाकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह तोमर (रामू भैया) ने कहा कि भाई जी के विचारों को आत्मसात करके उनके अधूरे कार्यों को लेकर आगे बढ़ना ही भाई जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। दिन दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का कार्य भाईजी ने बागी आत्मसमर्पण करके किया। जब उन्होंने 654 बागी डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया। रामू सिंह तोमर ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में 2 हजार नवजवानों का ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजन की इच्छा जाहिर की।कार्यक्रम में प्रफुल्ल श्रीवास्तव, डॉगर शर्मा, दीपक अग्रवाल, नरेश, संतोष सिंह, अनिल गुप्ता योगेश कुमार मौजूद रहे।

गांधी आश्रम में भाई जी की पुण्यतिथि पर आए देश भर से लोग

शांति के दूत थे डॉ. सुब्बाराव : तोमर

इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाई को चंबल में शांति का दूत बताया। इस अवसर पर भाई जी से जुड़े कार्यों की छाया चित्र पर 2025 साल का वार्षिक कैलेंडर का विमोचन किया गया। आश्रम प्रांगण में सामाजिक कार्यों से जुड़े कार्यों पर आधारित प्रदर्शनी भी लगायी गयी। इस कार्यक्रम में आंध्रप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना से आये शिविरार्थियों ने भी अपने विचार रखें। इस शिविर में मध्य प्रदेश के 18 जिलों से युवक युवतियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 5 टॉप-10 में 9 कंपनियों का मार्केट-कैप 2.10 लाख सम्पादकीय हेल्थ, वेल्थ, प्रेम और खुशी को साधकर साधो रोहित को टी-20 वाली नीतियों को रेस्ट में 5

वर्ष 18 ● अंक 251 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online भोपाल, सोमवार 28 अक्टूबर 2024 email - hindustanexpressbhopal@Gmail.com, hindustanexpresshe@Gmail.com मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

दीन-दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए: देवेन्द्र प्रताप सिंह

देशभर से आए नवजवानों ने किया भाईजी का पुण्य स्मरण

विश्व शांति और बंधुत्व के पैरोकार रहे भाईजी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। स्व. डॉ. एसएन सुब्बाराव की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर देश भर से आए नवजवानों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रन सिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्व के नवजवानों को एकता, बंधुत्व और प्रेम के लिए अपने आचरण और व्यक्तव्य से जागरूक और प्रेरित करने के साथ ही चम्बल को बागी समस्या से मुक्त कराया था। भारतीय हॉकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर (रामू) ने कहा कि भाई जी के विचारों को आत्मसात करके उनके अधूरे कार्यों को लेकर आगे बढ़ना ही भाई जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। दीन-दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का कार्य भाईजी ने बागी आत्मसमर्पण करके किया। जब उन्होंने 654 बागी डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया। रामू भैया ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में 2 हजार नवजवानों का ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजन की इच्छा ज़ाहिर की। इस अवसर पर पूरे देश भर से आए नवजवानों और भाई जी से प्रेरित लोगों ने अपने अपने स्मरण सुनाकर भाई जी को याद किया। राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी सुकुमारन ने कहा कि जौरा में भाई ने जो कार्य किया है उससे जौरा का नाम एक शांति पर्यटक स्थल के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। उत्तर प्रदेश से आए विश्वात्मा जी ने कहा कि भाई जी राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे। महाराष्ट्र के नरेंद्र ने कहा कि नवजवानों और बच्चों को संस्कार देकर भारत माता की सेवा का व्रत लिया था। वरिष्ठ पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाईजी को चम्बल में शांति का दूत बताया। आंध्राप्रदेश से आयी जुबेदा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि भाई जी भाषायी बाधाओं को पार कर सभी भाषाओं और धर्मग्रंथो की जानकारी रखते थे। नगरपालिका जौरा के अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने कहा कि जौरा नगर में एक मार्ग का नाम भाई जी के नाम पर रखा गया है जिसका भूमिपुजन राजगोपाल जी के द्वारा किया गया था। यहां पर पूर्व विधायक महेश दत्त मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार जगदीश शुक्ला, समाजसेवी कैलाश मित्तल, पत्रकार जेपी पाराशर, चंद्रमोहन शर्मा, एडवोकेट दिनेश सिंह सिकरवार, अवधेश सिंह सिकरवार, गिर्राज शर्मा सहित अन्य समाजसेवी नागरिक उपस्थित रहे।

भाई जी की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर विशेष

भाई जी के आदर्शों पर चलकर युबा पीढ़ी को सँस्कारित किया जाएगा : रनसिंह परमार

जौरा(निज संवाददाता)। पूज्य भाई जी डॉ एस एन सुब्बाराव जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गाँधी आश्रम जौरा मे चल रहे राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर के दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आए युवा साथियो को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय युबा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जाएगा।उन्होंने बताया कि भाई जी ने देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए युवाओं को मुख्य रूप से चार कार्यक्रम दिए थे जिनमें श्रम संस्कार,बहु भाषा सीख,सामूहिक खेल,सर्वधर्म प्रार्थना एवं भारत की संतान की प्रस्तुति राष्ट्र एक दूसरे से जोड़ने में काफी सफल हुई।देश के लगभग सभी राज्यों में राष्ट्रीय युवा योजना के स्वयं सेवक मिल जाए हे जो हर समय सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।इन पांचों भाईजी के कार्यक्रमों को देश भर में फैलाने की योजना तैयार करने के लिए देश के 18 राज्यों के युवा मंथन कर रहे हैं।

इस अवसर पर महात्मा गांधी के संदेश को जनजन तक पहुंचाने के लिए गांधी वीडियो प्रतियोगिता का आयोजन भी राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा किया जा रहा है ताकि गांधी के बताए सिद्धांतों पर आधारित खुशहाल समाज बनाया जा सके।

इस अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी श्री सुकुमास जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाई जी के त्याग और देश के लिए समर्पण से प्रेरणा लेने के लिए देश भर के युवाओं को जौरा भाई जी की समाधि के दर्शन करने के लिए अभियान की शुरुआत की जाएगी।

इस राष्ट्रीय शिविर में बिहार से सुनील सेवक,दिल्ली सुभाष माली,गुजरात से पंकज झाला,छत्तीसगढ़ से चूड़ामणि जी,हरियाणा से युद्धवीर,कर्नाटक से प्रशांत कुमार,केरल से मनोज कुमार,महाराष्ट्र से नरेंद्र भाई,राजस्थान से हनुमान जी,तेलंगाना से यादवराजू,तमिलनाडु से करुणाकरण,उत्तर प्रदेश विश्वात्मा,पश्चिमी बंगाल से सुविधाहित मध्य प्रदेश के 19 जिलों के प्रतिनिधि शामिल हैं

ज्ञात हो कि यह शिविर राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का आयोजन भाई जी (डॉ. एस.एन. सुब्बाराव) की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वाधान में किया जा रहा हैं। इस शिविर में 18 राज्यों के लगभग तीन सौ युवा शामिल हुए, जिन्होंने पूरे देश में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने का संकल्प लिया।

भाई जी की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर विशेष

भाई जी के आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को सँस्कारित किया जाएगा : रनसिंह परमार

जौरा(निज संवाददाता)। पूज्य भाई जी डॉ एस एन सुब्बाराव जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गाँधी आश्रम जौरा मे चल रहे राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर के दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आए युवा साथियो को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जाएगा।उन्होंने बताया कि भाई जी ने देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए युवाओं को मुख्य रूप से चार कार्यक्रम दिए थे जिनमें श्रम संस्कार,बहु भाषा सीख,सामूहिक खेल,सर्वधर्म प्रार्थना एवं भारत की संतान की प्रस्तुति राष्ट्र एक दूसरे से जोड़ने में काफी सफल हुई।देश के लगभग सभी राज्यों में राष्ट्रीय युवा योजना के स्वयं सेवक मिल जाए हे जो हर समय सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।इन पांचों भाईजी के कार्यक्रमों को देश भर में फैलाने की योजना तैयार करने के लिए देश के 18 राज्यों के युवा मंथन कर रहे हैं।

इस अवसर पर महात्मा गांधी के संदेश को जनजन तक पहुंचाने के लिए गांधी वीडियो प्रतियोगिता का आयोजन भी राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा किया जा रहा है ताकि गांधी के बताए सिद्धांतों पर आधारित खुशहाल समाज बनाया जा सके।

इस अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी श्री सुकुमास जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाई जी के त्याग और देश के लिए समर्पण से प्रेरणा लेने के लिए देश भर के युवाओं को जौरा भाई जी की समाधि के दर्शन करने के लिए अभियान की शुरुआत की जाएगी।

इस राष्ट्रीय शिविर में बिहार से सुनील सेवक,दिल्ली सुभाष मावी,गुजरात से पंकज झाला,छत्तीसगढ़ से चूड़ामणि जी,हरियाणा से युद्धवीर,कर्नाटक से प्रशांत कुमार,केरल से मनोज कुमार,महाराष्ट्र से नरेंद्र भाई,राजस्थान से हनुमान जी,तेलंगाना से यादवराजू,तमिलनाडु से करुणाकरण,उत्तर प्रदेश विश्वात्मा,पश्चिमी बंगाल से सुविधाहित मध्य प्रदेश के 19 जिलों के प्रतिनिधि शामिल हैं

ज्ञात हो कि यह शिविर राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का आयोजन भाई जी (डॉ. एस.एन. सुब्बाराव) की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वाधान में किया जा रहा हैं। इस शिविर में 18 राज्यों के लगभग तीन सौ युवा शामिल हुए, जिन्होंने पूरे देश में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने का संकल्प लिया।

सम्पूर्ण मध्यप्रदेश, राजस्थान, उ.प्र. में तेजी से बढ़ता सांध्य दैनिक

मध्य जनदर्शन

RNI.NO.MPHIN/2003/13131

"प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षाप्रद पाठ हैं, परंतु उससे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है।
- हरिऔध

मौसम

	अधि.	न्यू.
ग्वालियर	32.8	15.11
भोपाल	28.7	18.12
इंदौर	26.5	21.0
जबलपुर	27.7	12.0

पेज नं. 2 पर

पेज नं. 8 पर | विज्ञापन

पेज नं. 7 पर

वर्ष : 21, अंक 258 | ग्वालियर, रविवार 27 अक्टूबर 2024 | मूल्य 1 रुपया, पृष्ठ 8

भाईजी के आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को सँस्कारित किया जाएगा : रनसिंह परमार

जौरा। भाईजी डॉ. एस.एन. सुब्बाराव जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गाँधी आश्रम जौरा में चल रहे संस्कार शिविर के दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आए युवा साथियों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय युबा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाईजी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जा सकता है। इस अवसर पर शिविर मे अन्य राज्यों से आए हुए युवाओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए:-

प्रजेषा (केरल): उन्होंने भाई जी के आदर्शों और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। प्रेजषा ने बताया कि भाई जी के सिद्धांतों ने उन्हें जीवन में सही दिशा दिखाने में मदद की और उन्होंने हमेशा सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने का प्रयास किया।

सुरेश मावी (दिल्ली) उन्होंने युवाओं को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। श्री मावी ने युवाओं को समझाया कि समाज में एकता और भाईचारा बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है और कैसे यह समाज को मजबूत और समृद्ध बना सकता है।

इति मुखरिया उत्तर प्रदेश: उन्होंने शांति और अहिंसा के महत्व पर जोर दिया। इति ने बताया कि शांति और अहिंसा ही समाज में स्थिरता और विकास का आधार हैं और हमें हमेशा इन मूल्यों को अपनाना चाहिए।

फातिमा (तमिलनाडु): उन्होंने महिलाओं की भूमिका और उनके सशक्तिकरण पर अपने विचार साझा किए। फातिमा ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि कैसे महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

युद्धवीर (हरियाणा): उन्होंने युवाओं को सामाजिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। युद्धवीर ने युवाओं को समाज सेवा के महत्व को समझाया और उन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

6:45 86%

उदयदेश समाचार

ा अवश्य करना चाहिए एस सिर्फ कार्तिक मास म ही नही हर दिन पूजन करन स आपक चारा ओर सकारात्मक शक्ति का वाश होता ह वज्ञानिक रूप स निकारक कीटाणु मरते है ओर उनके पत्ते में एंटीबायोटिक गुण है जो अनेक रोगों को ख़त्म करता है।

देश भर से आए नवजवानों ने किया भाई जी का पुण्य स्मरण

विश्व शांति और बंधुत्व के पैरोकार रहे भाई जी

निज संवाददाता

जौरा। स्वर्गीय डा एस एन सुब्बाराव भाई जी की तृतीय पुण्य तिथि के अवसर पर देश भर से आए नवजवानों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव डॉ रन सिंह परमार ने कहा कि भाई जी ने पूरे देश ही नहीं विश्व के नवजवानों को एकता, बंधुत्व और प्रेम के लिए अपने आचरण और व्यक्तव्य से जागरूक और प्रेरित करने के साथ ही चम्बल को बागी समस्या से मुक्त कराया था।भारतीय हाकी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह तोमर (रामू भैया) ने कहा कि भाई जी के विचारों को आत्मसात करके उनके अधूरे कार्यों को लेकर आगे बढ़ना ही भाई जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। दिन दुखियों की सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। दस्यु पीड़ित इलाके की खराब पहचान को खत्म करने का कार्य भेजी ने बागी आत्मसमर्पण करके किया। जब उन्होंने 654 बागी डकैतों का हृदय परिवर्तन करके आत्म समर्पण कराया। रामू सिंह तोमर ने राष्ट्रीय युवा योजना के नेतृत्व में 2 हजार नवजवानों का ग्वालियर में राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजन की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर पूरे देश भर से आए नवजवानों और भाई जी से प्रेरित लोगों ने अपने अपने स्मरण सुनाकर भाई जी को याद किया। राष्ट्रीय युवा योजना के ट्रस्टी सुकुमारन ने कहा कि जौरा में भाई ने जो कार्य किया है उससे जौरा का नाम एक शांति पर्यटक स्थल के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। उत्तर प्रदेश से आए विश्वात्मा जी ने कहा कि भाई जी राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे। महाराष्ट्र के नरेंद्र ने कहा कि नवजवानों और बच्चों को संस्कार देकर भारत माता की सेवा का व्रत लिया था। वरिष्ठ पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता जयंत सिंह तोमर ने भाई को चम्बल में शांति का दूत बताया। आंध्राप्रदेश से आयी जुबेदा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि भाई जी भाषायी बाधाओं को पार कर सभी भाषाओं और धर्मग्रंथो की जानकारी रखते थे। बिहार से आये सुनिल सेवक ने कहा कि भाई जी ने लाखों नवजवानों में राष्ट्रीय एकता के बीज का रोपण किया था। छत्तीसगढ से आये चूड़ामणि ने कहा कि समाज कार्य के लिए भाई जी ने लाखों नवजवानों को प्रेरित किया। दिल्ली से आये सुभाषमवि ने कहा कि देश में आपदाकाल के दौरान भाई जी ने हमेशा देश भर के नवजवानों को एकत्र करके पीडित मानवता के लिए सेवा की और दूसरों को प्रेरित किया। गुजरात से आये पंकज झाला ने कहा कि भाई जी पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक देश के कोने कोने में नवजवानों को नेतृत्व प्रदान किया। राजस्थान से आये हनुमान शर्मा ने कहा कि भारत माता के सच्चे सपूत भाई जी ने राजस्थान में सूखा से निपटने के लिए कई तालाबो और जलाशयों को हजारों नवजवानों के साथ श्रमदान के माध्यम से जल संरक्षण का कार्य किया जिसे आज भी लोग याद करते हैं। नगर पालिका जौरा के अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने कहा कि जौरा नगर में एक मार्ग का नाम भाई जी के नाम पर रखा गया है जिसका भूमिपुजन राजगोपाल जी के द्वारा किया गया था। नगर अध्यक्ष ने आश्रम के बगल में स्थित पार्क में भाई जी की मूर्ति लगाने की घोषणा की। इसके बाद नरेंद्र भाई और सुनील सेवक ने मिलकर संयुक्त प्रेरणा गीत गाकर लोगों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर भाई जी से जुड़े कार्यों की छाया चित्र पर 2025 साल का वार्षिक कैलेंडर का विमोचन किया गया। आश्रम के प्रांगण में सामाजिक कार्यो से जुड़े कार्यों पर आधारित प्रदर्शनी भी लगायी गयी।इस अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय शिविर में आये नवजवानों के द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया और भाई जी की समाधि स्थल पर फूल अर्पित किया गया। शिविर में आंध्राप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना से आये शिविरार्थियों ने भी अपने विचार रखें। ज्ञात हो कि इस शिविर में पूरे मध्यप्रदेश के 18 जिलों से भी युवक युवतियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में शिक्षाविद् एल.एन.त्यागी के नेतृत्व में उनके विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन में प्रफुल्ल श्रीवास्तव, डोंगर शर्मा, दीपक अग्रवाल, नरेश, संतोष सिंह, अनिल गुप्ता, दीलिप जैन, योगेश कुमार, लक्ष्मीनारायण शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

■ मध्यप्रदेश ■ राजस्थान ■ छत्तीसगढ़ ■ नई दिल्ली से प्रकाशित

संडे

दैनिक

अजय भारत

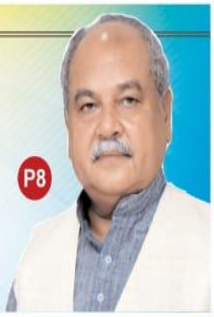

P8

ग्वालियर रविवार 27 अक्टूबर 2024, वर्ष 12 अंक 7 www.ajaybharat.com पेज 8, मूल्य- ₹ 2 रूपये

स्व. एस. एन. सुब्बाराव भाई जी के आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जायेगा : रन सिंह

जौरा। अजय भारत न्यूज

डॉ. एस एन सुब्बाराव की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर गाँधी आश्रम जौरा मे चल रहे संस्कार शिविर के दूसरे दिन देश के 18 राज्यों से आये युवा साथियों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना के सचिव रनसिंह परमार ने कहा कि भाई जी देश की तरुणाई के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और उनके आदर्शों पर चलकर युवा पीढ़ी को संस्कारित किया जा सकता है।

इस अवसर पर शिविर मे अन्य राज्यों से आए हुए युवाओं ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

इस अवसर पर प्रजेषा (केरल) ने भाई जी के आदर्शों और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। प्रेजषा ने बताया कि भाई जी के सिद्धांतों ने उन्हें जीवन में सही दिशा दिखाने में मदद की और उन्होंने हमेशा सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने का प्रयास किया।

सुरेश मावी (दिल्ली) ने युवाओं को एकता और भाईचारे का संदेश दिया। श्री मावी ने युवाओं को समझाया कि समाज में एकता और भाईचारा बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है और कैसे यह समाज को मजबूत और समृद्ध बना सकता है।

इति मुखरिया उत्तर प्रदेश ने शांति और अहिंसा के महत्व पर जोर दिया। इति ने बताया कि शांति और अहिंसा ही समाज में स्थिरता और विकास का आधार हैं और हमें हमेशा इन मूल्यों को अपनाना चाहिए।

फातिमा (तमिलनाडु) ने महिलाओं की भूमिका और उनके सशक्तिकरण पर अपने विचार साझा किए। फातिमा ने महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि कैसे महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

युद्धवीर (हरियाणा) ने युवाओं को सामाजिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। युद्धवीर ने युवाओं को समाज सेवा के महत्व को समझाया और उन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

पंकज झाला (गुजरात) ने भाई जी के आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। पंकज ने बताया कि भाई जी के आदर्श हमें एक बेहतर समाज बनाने में मदद कर सकते हैं और हमें उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

सुनील सेवक (बिहार) ने शिक्षा और संस्कार के महत्व पर अपने विचार रखे। सुनील ने शिक्षा और अच्छे संस्कारों को जीवन में सफलता और समाज में सम्मान प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण बताया।

नरेन्द्र भाई (महाराष्ट्र) ने भाई जी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रति समर्पण ओर सम्मान के विषय मे युवाओं को बताते हुए कहा कि हमें अपने मन में अपने देश के राष्ट्रीय ध्वज के प्रति हमेसा सम्मान की भावना रखना चाहिए,

प्रशांत (कर्नाटक) ने प्रशांत ने कहा कि भाई जी द्वारा दिए गए वक्तत्व +एक घंटा देह को एक घंटा देश को + ने मुझे बहुत प्रभावित किया मे आज सभी युवाओं से आह्वान करता हूं कि वह भी इस वक्तत को अपने जीवन मे उतारे.

लमकोटी (उत्तराखण्ड) ने कहा कि उन्होंने भाई जी से प्रेरणा लेकर कई रक्तदान शिविर के आयोजन किए जो कि निरंतर जारी है इन्होने युवाओ को दुसरो के कठिन समय मे सहयोग देने के लिए प्रेरित किया ।

मोहन (नेपाल) से पहली बार भाई जी से जुड़े कार्यक्रम मे भाग लेने आए ओर भाई जी के प्रति युवाओ के जुड़ाव को देखकर काफी प्रभावित हुए ।

वीरपाल सिंह (राजस्थान) ने कहा कि भाई जी के दिखाए रास्ते पर चलकर समाज से ऊंच नीच जैसी कुरेतियों को दूर किया जा सकता हैं आज युवाओं को जाति धर्म से आगे बढ़ कर एकजुट रहने कि आवश्कता है ।

ज्ञात हो कि यह शिविर राष्ट्रीय युवा संस्कार शिविर का आयोजन भाई जी (डॉ. एस.एन. सुब्बाराव) की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वाधान में किया जा रहा हैं । इस शिविर में 18 राज्यों के लगभग तीन सौ युवा शामिल हुए, जिन्होंने पूरे देश में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने का संकल्प लिया।

प्रबंधक प्रफुल्ल कुमार श्रीवास्तव ने बताया आज 27 अक्टूबर रविवार को भी महात्मा गांधी सेवा आश्रम में कार्यक्रम हुए ।

■ मध्यप्रदेश ■ राजस्थान ■ छत्तीसगढ़ ■ नई दिल्ली से प्रकाशित

दैनिक
अजय भारत

शुभं करोति कल्याणमारोग्यं धनसंपदा।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

धनतेरस
की हार्दिक शुभकामनाएं

ग्वालियर | मंगलवार 29 अक्टूबर 2024, वर्ष 12 अंक 09 | www.ajaybharat.com | पेज 8, मूल्य- ₹ 2 रूपये

भारत की संतान की प्रस्तुति भाई जी को सच्ची श्रद्धांजलि : डॉ. परमार

नरेंद्र भाई के नेतृत्व में एच एल ग्रुप के बच्चों ने की भारत की संतान कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुति

अजय भारत न्यूज

जौरा,(कासं) । भाई जी संत चरित्र महामानव थे, जौरा को विश्वस्तर पर भाई जी ने एक विशेष पहचान दिलाई है जौरा की पावन भूमि भाई जी के कृतित्व को हमेशा याद रखेगी, भाई जी की तृतीय पुण्यतिथि पर एच एल ग्रुप के दोनों प्रतिष्ठान एच एल बचपन स्कूल और एच एल हायर सेकेंडरी स्कूल के बच्चों ने भारत की संतान कार्यक्रम जो कि भाई जी का प्रिय कार्यक्रम है, प्रस्तुति देखकर भाई जी की यादों को ताजा कर दिया यह भाई जी को सच्चे अर्थों में श्रद्धांजलि है यह बात महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में भाई जी की त्रतीय पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव डॉक्टर रन सिंह परमार ने कही ।

भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर भाईजी की कर्मभूमि, महात्मा गांधी सेवा आश्रम, जौरा जिला मुरैना मध्य प्रदेश मे राष्ट्रीय युवा योजना देल्ही द्वारा राष्ट्रीय एकता युवा शिविर का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें महाराष्ट्र के नरेंद्र भाई के निर्देशन में ÷भारत की संतान÷ कार्यक्रम की बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति कर भाईजी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई । भारत की संतान÷ कार्यक्रम में एच एल हायर सेकेंडरी स्कूल और एच एल बचपन स्कूल के बच्चो ने ÷अनेकता में एकता÷ का सन्देश दिया । इस आयोजन में भारत के 18 प्रांतों के 300 से अधिक युवा प्रतिभागियों ने भागीदारी की जिसमें शिक्षाविद एल एन त्यागी के मार्गदर्शन में एच एल ग्रुप के बच्चों ने भारत की संतान कार्यक्रम को प्रस्तुत किया इस अवसर वरिष्ठ समाज सेवी कैलाश मित्तल ,एकता परिषद के डॉ. रन सिंह परमार डोंगर शर्मा ,प्रफुल्ल श्रीवास्तव, शीतल जैन, शिक्षाविद एल एन त्यागी, पत्रकार जे पी पाराशर, चंद्र मोहन शर्मा, जगदीश शुक्ला प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के विद्याराम प्रजापति महेश प्रजापति हरिओम पाराशर जितेंद्र त्यागी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे ।

मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान डॉ.एसएन सुब्बाराव

कुमार कृष्णन

देश की ताकत नौजवान, देश की दौलत नौजवान,देश की हिम्मत नौजवान, देश की इज्जत नौजवान , नौजवान जिन्दाबाद यह नारा है प्रसिद्ध गांधीवादी डॉ. एसएन सुब्बाराव का। डॉ. एस एन सुब्बाराव नाम है उस व्यक्तित्व का जो आजीवन शांति के लिए,अमन के लिए और भाईचारा के लिए प्रयासरत रहे।वे राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत के नाम से पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रहे।मेरी उनसे पहली मुलाकात इसी कड़ी में हुई। 24 अक्टूबर 1989 को शुरू हुआ भागलपुर दंगा देश के इतिहास का बदनुमा दाग था। जिसे याद कर आज भी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। तब सरकारी आंकड़े में पहले 1070 फिर बाद में 1161 लोगों के मारे जाने की बात कही गई। जबकि जस्टिस शमसुल हसन और आरएन प्रसाद कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार 1852 लोग मारे गए थे। डॉ एस एन सुब्बाराव का भागलपुर आगमन अमन के पैगाम को लेकर था। दंगाग्रस्त इलाकों में उनकी यात्राएं हुई। नुक्कड़ सभा हुई। सभा के अंत में बाल कवि बैरागी के लिखे गीत - 'नौजवान आओ रे, नौजवान गाओ रे/ लो कदम बढ़ाओ रे/ लो कदम उठाओ रे / नौजवान आओ रे/एक साथ बढ़ चलो, मुश्किलों से लड़ चलो/ इस महान देश को नया बनाओ रे /धर्म की दुहाइयाँ, प्रांत की जुदाइयाँ/भाषा की लड़ाइयाँ, पाट दो ये खाइयाँ ' जब डॉ. एसएन सुब्बाराव गाते थे तो उनके मुख से गीत के बोल निकलते ही साथ के लोग डॉ. राव के स्वर में स्वर मिलाकर गीत को दुहराने लगते थे। इसके बाद नारा लगता-' जोड़ो जोड़ो भारत जोड़ो, नफरत छोड़ो। डॉ एसएन सुब्बाराव की भागलपुर यात्रा के साक्षी रहे हैं अनिल किशोर सहाय। वे उस दौर में भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी थे। भागलपुर का नयाबाजार मुहल्ला दंगे से प्रभावित था। उनका कार्यालय नयाबाजार चौक पर था। उन्होंने सिर्फ खड़े होने की इजाजत मांगी और अपना अभियान प्रारंभ कर दिया। वे न सिर्फ भागलपुर आए, बल्कि सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित गोधरा, कानपुर, अलीगढ़ अहमदाबाद, मुंबई, जयपुर गौहाटी ,बनारस, जम्मू आदि जगहों पर हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में सद्भावना और शांति का मरहम लगाया। आजीवन उन्होंने गांधी के विचारों का न सिर्फ प्रचार किया बल्कि उसे धारण किया और अपनी जीवन शैली और कार्यक्रमों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जबकि गांधी के नाम पर नौटंकी कर लोग आत्ममुग्ध हैं। इसके ठीक उलट वे व्यक्तिगत प्रचार से दूर रहे। वे गांधीवादी सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक पुरुष थे। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता की, मूल्यों की, गैरराजनीति की, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने की या सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने के आदर्श मूल्यों की प्रेरणा था। सुब्बारावजी ने आठ दशक तक सक्रिय सार्वजनिक गांधीवादी जीवन जिया, उनका जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान है। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे। सार्वजनिक जीवन भी में बेदाग, विचारों में निडर,टूटते मूल्यों में अडिग, घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। रचनात्मक कार्यकर्ता बनाने का कठिन सपना गांधीजी का था, लेकिन सुब्बाराव ने रचनात्मक मानस के युवाओं को जोड़ने का अनूठा काम किया। उनके पास युवकों के साथ काम करने का गजब हुनर था। उनके इन्हीं मूल्यों ने आकर्षित किया। उनसे दूसरी मुलाकात वर्ष 1994 में हुई जब वे सद्भावना रेल यात्रा के दौरान भागलपुर आए थे। साथ में युवाओं की टोली। प्रवास के दौरान साईकिल यात्रा। अनेक कार्यक्रम। रामरतन चूड़ीवाला बताते हैं कि वे कहते थे - 'युवा एक घंटा देह और एक घंटा देश सेवा में लगाएं। दिग्भ्रमित युवाओं को रचनात्मक दिशा से जोड़कर हमें जागरूक जनता तक एकता की अहमियत का संदेश देने की आवश्यकता है। हमें युवाओं को आत्मविश्वासी बनाना है। ईश्वरीय प्रारूप में समस्त जन-अनुपम ऊर्जा के स्त्रोत हैं। आप गंदगी हटाने में, पड़ोसी निरक्षर को पढ़ाने में, एक पौधा लगाकर उसे पानी देकर आप राष्ट्र की सेवा में योगदान कर सकते हैं। हमारे रहते आसपास हिंसा न हो, कोई भूखा न सोया हो, नशा नाश की जड़ है इसलिए देश समाज नशा मुक्त हो, नशे की आदत को मालिक न बनने दें उस आदत को गुलाम बनाएं तथा भ्रष्टाचार पर पूर्णतः लगाम कसकर समाज को स्वर्ग बनाना संभव है।युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्य के प्रति सक्रिय करने के लिए उन्होंने 1970 में राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना की। इसी दौर में मध्यप्रदेश के मुरैना के जौरा में महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना की। ये आश्रम उन्होंने शांति सेवा केन्द्र के रूप में स्थापित किया। रण सिंह परमार बताते हैं कि पचास-साठ के दशक में चंबल घाटी के खूखार दस्युओं के आतंक से जहां सरकार परेशान थी, वहीं तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल पुलिस के जरिए इन पर शिकंजा कसने में लगे थे। लगभग रोज होने वाली मुठभेड़ में कभी डाकू मर रहे थे तो कभी पुलिसकर्मी शहीद हो रहे थे। उस वक्त उन्हें लगा कि शायद सरकार का तरीका गलत है। हर रोज हो रही हिंसा जब देखी न गई तो प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलकर उन्होंने गांधीवादी तरीके से दस्युओं को समझाने का एक मौका मांगा। लोकनायक जयप्रकाश नारायण व आचार्य विनोबा भावे जैसी हस्तियों ने उन्हें प्रोत्साहित किया। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन के चार साल चंबल घाटी के दस्युओं के बीच ही बिताकर उन्हें महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित किया। डॉ. सुब्बाराव के प्रयास ही थे कि हिंसा से बदनाम हो चुकी चंबल घाटी के 654 खूंखार दस्युओं ने सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण कर समाज की मुख्य धारा में शामिल होने का फैसला किया। एक बार वे मध्य प्रदेश की चंबल घाटी में डाकुओं के बीच उन्हें समझाने गए थे। वहां डाकू आपस में ही लड़ पड़े। चारों ओर से गोलियां चल रहीं थीं। एकबारगी तो लगा किकहीं उन्हें ही कोई गोली न लग जाए।। इसी बीच एक गोली किसी अन्य आदमी को आकर लगी और वो गिर पड़ा। इस दिल दहला देने वाली घटना के बाद भी उन्होंने हौसला नहीं खोया, डाकुओं को सज्जन बनाने के लिए पूरे प्रयास किए। आखिरकार 1972 में महात्मा गांधी सेवा आश्रम में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की मौजूदगी में डाकुओं ने आत्मसमर्पण भी किया।अलग-अलग भागों में डाकुओं में युवा चेतना शिविर लगाकर बदलाव कर उन्हें आत्मसमर्पण के लिए राजी किया। कभी 50 तो कभी 20 लोगों का मन बदलता तो उनका सरकार के सामने आत्मसमर्पण करवा देते।आखिरी बार जब डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया तो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी उन्हें देखने के लिए पहुंची। इसी स्थल से राष्ट्रीय युवा योजना का जन्म हुआ। युवाओं के सैकड़ों प्रशिक्षण शिविर का गवाह है यह स्थल। यहीं से उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रस्ताव केन्द्र सरकार को दिया, जो स्वीकृत हुआ और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) भारत सरकार के एक कार्यक्रम के रूप में उभरा। यह युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए चलाया जाता है।इस योजना के तहत, छात्र समाज के लिए काम करते हैं और समाज सेवा के गुण विकसित करते हैं। पोशाक के लिहाज से वे भले जीवन भर खादी के हाफ पेंट और हाफ शर्ट पहनते रहे लेकिन विचारों और बर्ताव में वे पूरे गांधीवादी थे। उन्होंने गांधी और जयप्रकाश जैसा ही बेदाग जीवन जिया। उनके पूरे जीवन काल में किसी भी मुद्दे पर उन पर कभी कोई उंगली नहीं उठी और ना ही वे किसी आरोपों के घेरे में कभी आए। उनकी कथनी और करनी एक थी। उनके जीवन का एक एक पल पारदर्शी था। सुब्बाराव का जन्म बेंगलुरू में 7 फरवरी 1929 को हुआ।उनका परिवार स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा हुआ था। उनके पिता वकील थे। वे स्कूली जीवन से सामाजिक कार्यों से जुड़ गए थे। मल्लेश्वरम बंगलोर के रामकृष्ण वेदांत मंदिर में 10 वर्ष की उम्र से ही वे गीता और उपनिषद के भक्ति गीतों का गायन करते थे। बहुत कम उम्र में ही वे गांधी जी से प्रभावित हो गए थे और भारत छोड़ो आंदोलन ने कूद पड़े थे उसके बाद वे वापस कभी नहीं मुड़े। वे गांधी के बताए रास्ते पर चलते ही गए और चलते फिरते ही वे इस दुनिया से सदा के लिए चले गए। बहुत कम लोगों को इतनी लंबी जिंदगी जीने का मौका मिलता है। महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने खादी पहनना शुरू किया था। 9 अगस्त 1942 को ब्रिटिश विद्रोही नारे लगाने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। वे राष्ट्रीय कांग्रेस सेवा दल के सदस्य उसी समय बन गए और मजदूरों के क्षेत्र में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केंद्र आरंभ किया। सन- 1948 में चित्रदुर्ग शिविर के दौरान वे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक नेता डॉ. हार्डिकर के संपर्क में आए। डॉ. हार्डिकर के कहने पर वे सन 1951 में अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल का काम करने दिल्ली आ गए। तब तक उन्होंने कानून की डिग्री हासिल कर ली थी। कांग्रेस कार्यकताओं के लिए पूरे देश में उन्होंने कैडर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के अन्य बड़े नेता उनकी संगठन कुशलता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सोवियत संघ, अफ्रीका,घाना सहित दुनियां के कई देशों में युवा प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व किया। 1970 में ही उन्हें गांधी शांति प्रतिष्ठान का आजीवन सदस्य बनाया गया। वे गांधी शताब्दी समारोह की जनसंपर्क उपसमिति के सचिव नियुक्त हुए। गांधी दर्शन रेल की परिकल्पना डॉ. सुब्बाराव की ही थी।उन्हें इस परियोजना का निदेशक नियुक्त किया गया। 1979-1980 में यह रेल उनके निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे देश में गयी। विलक्षण प्रतिभा के धनी भाईजी सविधान द्वारा मान्य 18 भाषाओं में बात करने और गायन की क्षमता रखते थे। फिर 1993-94-95, में उन्होंने भारत सरकार के सहयोग से सद्भावना रेल यात्रा आयोजित की जिसने भारत की हर दिशा में भ्रमण किया। देश के 26 प्रदेशों और कुछ बाहर के 4500 पुरुष और महिलाएं बारी-बारी से पूरे समय व अल्पकाल के लिए एक साथ रहे, जबकि उनकी भाषाएं, धार्मिक विश्वास, राजनीतिक विचार, सामाजिक परिपत्र में काफी भिन्नता थी। उनका मिशन था- प्रेम, मित्रता, सांप्रदायिक सद्भावना और शांति का संदेश फैलाना। एक यायावार की तरह उन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण किया। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, कनाडा,सिंगापुर आदि देशों में उन्होंने गांधी युवा क्रान्तिकारी शिविरों का संचालन किया। 1960 में अफ्रीका में युवा सम्मेलन में भाग लिया। 'सर्व धर्म विश्व संसद' शिकागो में स्वामी विवेकानंद के भाषण के शताब्दी समारोह के मौके पर भाई जी ने1993 में खार्ता प्रस्तुत की। उन्होंने 1999 में दक्षिण अफ्रीका में हुए सर्वधर्म विश्व सांसद सम्मेलन में भी भाग लिया। पद्मश्री से सम्मानित डॉ सुब्बा राव महात्मा गांधी पुरस्कार, जमनालाल बजाज पुरस्कार रचनात्मक कार्य, राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार,राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भावना पुरस्कार,विश्व मानवाधिकार प्रोत्साहन पुरस्कार, राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से पुरस्कृत किए जा चुके हैं। पिछले साल जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा चिरयुवा डॉ.एस.एन. सुब्बाराव (भाई जी) को मानद डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता सेनानी होते हुए भी उन्होंने कभी पेंशन की मांग नहीं की। उनकी हिम्मत की दाद देनी होगी कि उत्तरकाशी के भयंकर भूकंप में अपने 300 साथियों के साथ सहायता कार्य करते हुए कड़ाके की सर्दी में भी वे खादी के वस्त्र ही पहने रहे। वे आजीवन युवा शिविर आयोजित करते रहे। डॉ. एसएन सुब्बाराव जीवन भर अपनी सक्रियता से राष्ट्र की एकता अखंडता की अंतरधार को उष्मा देते रहे,वहीं उनसे प्रेरित होकर जुड़े युवा समूह शांति, प्रेम और राष्ट्र निर्माण के काम में लगे हुए हैं।27 अक्टूबर 2021 को जयपुर में वे ब्रह्मलीन हो गए। उनको गुजरे तीन साल हो गए। स्व. सुब्बाराव की कर्मस्थली जौरा रहा है, यहां उन्होंने गांधी सेवा आश्रम की नींव रखी, जिसमें उनका समाधि स्थल बनाया गया है। उनकी तीसरी पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए देशभर के युवाओं का समागम होगा। जो भाई जी कामना शांति और सद्भावना के संदेश को पूरी दुनिया में फैलाएंगे।

लखनऊ

लखनऊ, रविवार 27 अक्तूबर 2024

मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान डॉ.एसएन सुब्बाराव

(कुमार कृष्णन –विनायक फीचर्स)

'देश की ताकत नौजवान, देश की दौलत नौजवान,देश की हिम्मत नौजवान, देश की इज्जत नौजवान , नौजवान जिन्दाबाद यह नारा है प्रसिद्ध गांधीवादी डॉ. एसएन सुब्बाराव का। डॉ. एस एन सुब्बाराव

नाम है उस व्यक्तित्व का जो आजीवन शांति के लिए,अमन के लिए और भाईचारा के लिए प्रयासरत रहे। वे राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत के नाम से पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रहे।

मेरी उनसे पहली मुलाकात इसी कड़ी में हुई। 24 अक्टूबर 1989 को शुरू हुआ भागलपुर दंगा देश के इतिहास का बदनुमा दाग था। जिसे याद कर आज भी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। तब सरकारी आंकड़े में पहले 1070 फिर बाद में 1161 लोगों के मारे जाने की बात कही गई। जबकि जस्टिस शमसुल हसन और आरएन प्रसाद कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार 1852 लोग मारे गए थे। डॉ एस एन सुब्बाराव का भागलपुर आगमन अमन के पैगाम को लेकर था। दंगाग्रस्त इलाकों में उनकी यात्राएं हुई। नुक्कड़ सभा हुई। सभा के अंत में बाल कवि बैरागी के लिखे गीत –

'नौजवान आओ रे, नौजवान गाओ रे/ लो कदम बढ़ाओ रे/ लो कदम उठाओ रे / नौजवान आओ रे/एक साथ बढ़ चलो, मुश्किलों से लड़ चलो/ इस महान देश को नया बनाओ रे /धर्म की दुहाइयाँ, प्रांत की जुदाइयाँ /भाषा की लड़ाइयाँ, पाट दो ये खाइयाँ ' जब डॉ. एसएन सुब्बाराव गाते थे तो उनके मुख से गीत के बोल निकलते ही साथ के लोग डॉ. राव के स्वर में स्वर मिलाकर गीत को दुहराने लगते थे। इसके बाद नारा लगता–' जोड़ो जोड़ो भारत जोड़ो, नफरत छोड़ो।'

डॉ एसएन सुब्बाराव की भागलपुर यात्रा के साक्षी रहे हैं अनिल किशोर सहाय। वे उस दौर में भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी थे। भागलपुर का नयाबाजार मुहल्ला दंगे से प्रभावित था। उनका कार्यालय नयाबाजार चौक पर था। उन्होंने सिर्फ खड़े होने की इजाजत मांगी और अपना अभियान प्रारंभ कर दिया। वे न सिर्फ भागलपुर आए, बल्कि सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित गोधरा, कानपुर, अलीगढ़ अहमदाबाद, मुंबई , जयपुर गौहाटी ,बनारस, जम्मू आदि जगहों पर हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में सद्‌भावना और शांति का मरहम लगाया। आजीवन उन्होंने गांधी के विचारों का न सिर्फ प्रचार किया बल्कि उसे धारण किया और अपनी जीवन शैली और कार्यक्रमों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जबकि गांधी के नाम पर नौटंकी कर लोग आत्ममुग्ध है। इसके ठीक उलट वे व्यक्तिगत प्रचार से दूर रहे।

वे गांधीवादी सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक पुरुष थे। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता की, मूल्यों की, गैरराजनीति की, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने की या सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने के आदर्श मूल्यों की प्रेरणा था। सुब्बारावजी ने आठ दशक तक सक्रिय सार्वजनिक गांधीवादी जीवन जिया, उनका जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान है। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे। सार्वजनिक जीवन भी में बेदाग, विचारों में निडर,टूटते मूल्यों में अडिग, घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। रचनात्मक कार्यकर्ता बनाने का कठिन सपना गांधीजी का था, लेकिन सुब्बाराव ने रचनात्मक मानस के युवाओं को जोड़ने का अनूठा काम किया। उनके पास युवकों के साथ काम करने का गजब हुनर था। उनके इन्ही मूल्यों ने आकर्षित किया। उनसे दूसरी मुलाकात वर्ष 1994 में हुई जब वे सद्‌भावना रेल यात्रा के दौरान भागलपुर आए थे। साथ में युवाओं की टोली। प्रवास के दौरान साईकिल यात्रा। अनेक कार्यक्रम। रामरतन चूड़ीवाला बताते हैं कि वे कहते थे –

'युवा एक घंटा देह और एक घंटा देश सेवा मे लगाएं। दिग्भ्रमित युवाओं को रचनात्मक दिशा से जोड़कर हमें जागरूक जनता तक एकता की अहमियत का संदेश देने की आवश्यकता है। हमें युवाओं को आत्मविश्वासी बनाना है। ईश्वरीय प्रारूप में समस्त जन–अनुपम ऊर्जा के स्त्रोत हैं। आप गंदगी हटाने में, पड़ोसी निरक्षर को पढ़ाने में, एक पौधा लगाकर उसे पानी देकर आप राष्ट्र की सेवा में योगदान कर सकते हैं। हमारे रहते आसपास हिंसा न हो, कोई भूखा न सोया हो, नशा नाश की जड़ है इसलिए देश समाज नशा मुक्त हो, नशे की आदत को मालिक न बनने दें उस आदत को गुलाम बनाएं तथा भ्रष्टाचार पर पूर्णतः लगाम कसकर समाज को स्वर्ग बनाना संभव है।

युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्य के प्रति सक्रिय करने के लिए उन्होंने 1970 में राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना की। इसी दौर में मध्यप्रदेश के मुरैना के जौरा में महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना की। ये आश्रम उन्होंने शांति सेवा केन्द्र के रूप में स्थापित किया। रण सिंह परमार बताते हैं कि पचास–साठ के दशक में चंबल घाटी के खूंखार दस्युओं के आतंक से जहां सरकार परेशान थी, वहीं तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल पुलिस के जरिए इन पर शिकंजा कसने में लगे थे। लगभग रोज होने वाली मुठभेड़ में कभी डाकू मर रहे थे तो कभी पुलिसकर्मी शहीद हो रहे थे।

उस वक्त उन्हें लगा कि शायद सरकार का तरीका गलत है। हर रोज हो रही हिंसा जब देखी न गई तो प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलकर उन्होंने गांधीवादी तरीके से दस्युओं को समझाने का एक मौका मांगा।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण व आचार्य विनोबा भावे जैसी हस्तियों ने उन्हें प्रोत्साहित किया। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन के चार साल चंबल घाटी के दस्युओं के बीच ही बिताकर उन्हें महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित किया। डॉ. सुब्बाराव के प्रयास ही थे कि हिंसा से बदनाम हो चुकी चंबल घाटी के 654 खूंखार दस्युओं ने सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण कर समाज की मुख्य धारा में शामिल होने का फैसला किया। एक बार वे मध्य प्रदेश की चंबल घाटी में डाकुओं के बीच उन्हें समझाने गए थे। वहां डाकू आपस में ही लड़ पड़े। चारों ओर से गोलियां चल रही थीं। एकबारगी तो लगा किकहीं उन्हें ही कोई गोली न लग जाए।। इसी बीच एक गोली किसी अन्य आदमी को आकर लगी और वो गिर पड़ा। इस दिल दहला देने वाली घटना के बाद भी उन्होंने हौसला नहीं खोया, डाकुओं को सज्जन बनाने के लिए पूरे प्रयास किए। आखिरकार 1972 में महात्मा गांधी सेवा आश्रम में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की मौजूदगी में डाकुओं ने आत्मसमर्पण भी किया।अलग–अलग भागों में डाकुओं में युवा चेतना शिविर लगाकर बदलाव कर उन्हें आत्मसमर्पण के लिए राजी किया। कभी 50 तो कभी 20 लोगों का मन बदलता तो उनका सरकार के सामने आत्मसमर्पण करवा देते। आखिरी बार जब डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया तो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी उन्हें देखने के लिए पहुंची। इसी स्थल से राष्ट्रीय युवा योजना का जन्म हुआ। युवाओं के सैकड़ों प्रशिक्षण शिविर का गवाह है यह स्थल। यहीं से उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रस्ताव केन्द्र सरकार को दिया, जो स्वीकृत हुआ और

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) भारत सरकार के एक कार्यक्रम के रूप में उभरा। यह युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए चलाया जाता है इस योजना के तहत, छात्र समाज के लिए काम करते हैं और समाज सेवा के गुण विकसित करते हैं।

पोशाक के लिहाज से वे भले जीवन भर खादी के हाफ पेंट और हाफ शर्ट पहनते रहे लेकिन विचारों और बर्ताव में वे पूरे गांधीवादी थे। उन्होंने गांधी और जयप्रकाश जैसा ही बेदाग जीवन जिया। उनके पूरे जीवन काल में किसी भी मुद्दे पर उन पर कभी कोई उंगली नहीं उठी और ना ही वे किसी आरोपों के घेरे में कभी आए। उनकी कथनी और करनी एक थी। उनके जीवन का एक एक पल पारदर्शी था।

सुब्बाराव का जन्म बेंगलुरू में 7 फरवरी 1929 को हुआ।उनका परिवार स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा हुआ था। उनके पिता वकील थे। वे स्कूली जीवन से सामाजिक कार्यों से जुड़ गए थे। मल्लेश्वरम बंगलोर के रामकृष्ण वेदांत मंदिर में 10 वर्ष की उम्र से ही वे गीता और उपनिषद के भक्ति गीतों का गायन करते थे। बहुत कम उम्र में ही वे गांधी जी से प्रभावित हो गए थे और भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े थे उसके बाद वे वापस कभी नहीं मुड़े। वे गांधी के बताए रास्ते पर चलते ही गए और चलते फिरते ही वे इस दुनिया से सदा के लिए चले गए। बहुत कम लोगों को इतनी लंबी जिंदगी जीने का मौका मिलता है। महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने खादी पहनना शुरू किया था। 9 अगस्त 1942 को ब्रिटिश विद्रोही नारे लगाने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। वे राष्ट्रीय कांग्रेस सेवा दल के सदस्य उसी समय बन गए और मजदूरों के क्षेत्र में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केंद्र आरंभ किया। सन् 1948 में चित्रदुर्गा शिविर के दौरान वे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक नेता डॉ. हार्डिकर के संपर्क में आए। डॉ. हार्डिकर के कहने पर वे सन 1951 में अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल का काम करने दिल्ली आ गए। तब तक उन्होंने कानून की डिग्री हासिल कर ली थी। कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए पूरे देश में उन्होंने कैडर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के अन्य बड़े नेता उनकी संगठन कुशलता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सोवियत संघ, अफ्रीका,घाना सहित दुनियां के कई देशों में युवा प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व किया। 1970 में ही उन्हें गांधी शांति प्रतिष्ठान का आजीवन सदस्य बनाया गया। वे गांधी शताब्दी समारोह की जनसंपर्क उपसमिति के सचिव नियुक्त हुए। गांधी दर्शन रेल की परिकल्पना डॉ. सुब्बाराव की ही थी। उन्हें इस परियोजना का निदेशक नियुक्त किया गया। 1979–1980 में यह रेल उनके निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे देश में गयी। विलक्षण प्रतिभा के धनी भाईजी संविधान द्वारा मान्य 18 भाषाओं में बात करने और गायन की क्षमता रखते थे।

फिर 1993–94–95, में उन्होंने भारत सरकार के सहयोग से सद्‌भावना रेल यात्रा आयोजित की जिसने भारत की हर दिशा में भ्रमण किया। देश के 26 प्रदेशों और कुछ बाहर के 4500 पुरुष और महिलाएं बारी–बारी से पूरे समय व अल्पकाल के लिए एक साथ रहे, जबकि उनकी भाषाएं, धार्मिक विश्वास, राजनीतिक विचार, सामाजिक परिपत्र में काफी भिन्नता थी। उनका मिशन था– प्रेम, मित्रता, सांप्रदायिक सद्‌भावना और शांति का संदेश फैलाना।

एक यायावर की तरह उन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण किया। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, कनाडा,सिंगापुर आदि देशों में उन्होंने गांधी युवा क्रान्तिकारी शिविरों का संचालन किया। 1960 में अफ्रीका में युवा सम्मेलन में भाग लिया। 'सर्व धर्म विश्व संसद' शिकागो में स्वामी विवेकानंद के भाषण के शताब्दी समारोह के मौके पर भाई जी ने1993 में वार्ता प्रस्तुत की। उन्होंने 1999 में दक्षिण अफ्रीका में हुए सर्वधर्म विश्व सांसद सम्मेलन में भी भाग लिया।

पद्मश्री से सम्मानित डॉ सुब्बा राव महात्मा गांधी पुरस्कार, जमनालाल बजाज पुरस्कार रचनात्मक कार्य, राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्‌भावना पुरस्कार,राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्‌भावना पुरस्कार,विश्व मानवाधिकार प्रोत्साहन पुरस्कार, राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से पुरस्कृत किए जा चुके हैं।

पिछले साल जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा चिरयुवा डॉ. एस. एन. सुब्बाराव (भाई जी) को मानद डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता सेनानी होते हुए भी उन्होंने कभी पेंशन की मांग नहीं की। उनकी हिम्मत की दाद देनी होगी कि उत्तरकाशी के भयंकर भूकंप में अपने 300 साथियों के साथ सहायता कार्य करते हुए कड़ाके की सर्दी में भी वे खादी के वस्त्र ही पहने रहे। वे आजीवन युवा शिविर आयोजित करते रहे। डॉ. एसएन सुब्बाराव जीवन भर अपनी सक्रियता से राष्ट्र की एकता अखंडता की अंतरधार को उष्मा देते रहे,वहीं उनसे प्रेरित होकर जुड़े युवा समूह शांति, प्रेम और राष्ट्र निर्माण के काम में लगे हुए हैं। 27 अक्टूबर 2021 को जयपुर में वे ब्रह्मलीन हो गए। उनको गुजरे तीन साल हो गए। स्व. सुब्बाराव की कर्मस्थली जौरा रहा है, यहां उन्होंने गांधी सेवा आश्रम की नींव रखी, जिसमें उनका समाधि स्थल बनाया गया है। उनकी तीसरी पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए देशभर के युवाओं का समागम होगा। जो भाई जी कामना शांति और सद्‌भावना के संदेश को पूरी दुनिया में फैलाएंगे।(विनायक फीचर्स)

तन-मन का अँधेरा पहले मिटाओ

दीपक हृदय का पहले जलाओ,
तन-मन का अँधेरा पहले मिटाओ,
धरा का उठाना न आसान होगा,
गगन को झुकाना न आसान होगा।

इस वर्ष दीवाली फिर आ गई है,
आप दीपक जलायें पर ना बुझायें,
नशे की आदत को पहले भगाओ,
तन-मन का अँधेरा पहले मिटाओ।

घृणा द्वेष ईर्ष्या का है बोलबाला,
अहंकार सबके दिलों में है फैला,
स्नेह की डोर से इन सबको हराओ,
तन-मन का अँधेरा पहले मिटाओ।

आबादी विश्व की बढ़ती जा रही

मूल्यों एवं सिद्धांतों की प्रेरक दास्तान डॉ.एसएन सुब्बाराव

कुमार कृष्णन

'देश की ताकत नौजवान, देश की दौलत नौजवान,देश की हिम्मत नौजवान, देश की इज्जत नौजवान , नौजवान जिन्दाबाद यह नारा है प्रसिद्ध गांधीवादी डॉ. एसएन सुब्बाराव का। डॉ. एस एन सुब्बाराव नाम है उस व्यक्तित्व का जो आजीवन शांति के लिए,अमन के लिए और भाईचारा के लिए प्रयासरत रहे। वे राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत के नाम से पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रहे।

मेरी उनसे पहली मुलाकात इसी कड़ी में हुई। 24 अक्टूबर 1989 को शुरू हुआ भागलपुर दंगा देश के इतिहास का बदनुमा दाग था। जिसे याद कर आज भी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। तब सरकारी आंकड़े में पहले 1070 फिर बाद में 1161 लोगों के मारे जाने की बात कही गई। जबकि जस्टिस शमसुल हसन और आरएन प्रसाद कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार 1852 लोग मारे गए थे। डॉ एस एन सुब्बाराव का भागलपुर आगमन अमन के पैगाम को लेकर था। दंगाग्रस्त इलाकों में उनकी यात्राएं हुईं। नुक्कड़ सभा हुई। सभा के अंत में बाल कवि बैरागी के लिखे गीत -

'नौजवान आओ रे, नौजवान गाओ रे/ लो कदम बढ़ाओ रे/ लो कदम उठाओ रे / नौजवान आओ रे/एक साथ बढ़ चलो, मुश्किलों से लड़ चलो/

इस महान देश को नया बनाओ रे /धर्म की दुहाइयां, प्रांत की जुदाइयां/भाषा की लड़ाइयां, पाट दो ये खाइयां ' जब डॉ. एसएन सुब्बाराव गाते थे तो उनके मुख से गीत के बोल निकलते ही साथ के लोग डॉ. राव के स्वर में स्वर मिलाकर गीत को दुहराने लगते थे। इसके बाद नारा लगता- ' जोड़ो जोड़ो भारत जोड़ो, नफरत छोड़ो।'

डॉ एसएन सुब्बाराव की भागलपुर यात्रा के साक्षी रहे हैं अनिल किशोर सहाय। वे उस दौर में भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी थे। भागलपुर का नयाबाजार मुहल्ला दंगे से प्रभावित था। उनका कार्यालय नयाबाजार चौक पर था। उन्होंने सिर्फ खड़े होने की इजाजत मांगी और अपना अभियान प्रारंभ कर दिया। वे न सिर्फ भागलपुर आए, बल्कि सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित गोधरा, कानपुर, अलीगढ़ अहमदाबाद, मुंबई , जयपुर गौहाटी ,बनारस, जम्मू आदि जगहों पर हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में सद्भावना और शांति का मरहम लगाया। आजीवन उन्होंने गांधी के विचारों का न सिर्फ प्रचार किया बल्कि उसे धारण किया और अपनी जीवन शैली और कार्यक्रमों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जबकि गांधी के नाम पर नौटंकी कर लोग आत्ममुग्ध हैं। इसके ठीक उलट वे व्यक्तिगत प्रचार से दूर रहे।

वे गांधीवादी सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक पुरुष थे। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता की, मूल्यों की, गैर-राजनीति की, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने की या सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने के आदर्श मूल्यों की प्रेरणा था। सुब्बारावजी ने आठ दशक तक सक्रिय सार्वजनिक गांधीवादी जीवन जिया, उनका जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान है। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे। सार्वजनिक जीवन भी में बेदाग, विचारों में निडर,टूटते मूल्यों में अडिग, घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। रचनात्मक कार्यकर्ता बनाने का कठिन सपना गांधीजी का था, लेकिन सुब्बाराव ने रचनात्मक मानस के युवाओं को जोड़ने का अनूठा काम किया। उनके पास युवकों के साथ काम करने का गजब हुनर था। उनके इन्हीं मूल्यों ने आकर्षित किया।

डॉ.एस.एन.सुब्बाराव

प्रख्यात अभिनेता सुनीलदत्त के साथ श्री सुब्बाराव

उनसे दूसरी मुलाकात वर्ष 1994 में हुई जब वे सद्भावना रेल यात्रा के दौरान भागलपुर आए थे। साथ में युवाओं की टोली। प्रवास के दौरान साईकिल यात्रा। अनेक कार्यक्रम। रामरतन चूड़ीवाला बताते हैं कि वे कहते थे -

'युवा एक घंटा देह और एक घंटा देश सेवा मे लगाएं। दिग्भ्रमित युवाओं को रचनात्मक दिशा से जोड़कर हमें जागरूक जनता तक एकता की अहमियत का संदेश देने की आवश्यकता है। हमें युवाओं को आत्मविश्वासी बनाना है। ईश्वरीय प्रारूप में समस्त जन-अनुपम ऊर्जा के स्रोत हैं। आप गंदगी हटाने में, पड़ोसी निरक्षर को पढ़ाने में, एक पौधा लगाकर उसे पानी देकर आप राष्ट्र की सेवा में योगदान कर सकते हैं। हमारे रहते आसपास हिंसा न हो, कोई भूखा न सोया हो, नशा नाश की जड़ है इसलिए देश समाज नशा मुक्त हो, नशे की आदत को मालिक न बनने दें उस आदत को गुलाम बनाएं तथा भ्रष्टाचार पर पूर्णतः लगाम कसकर समाज को स्वर्ग बनाना संभव है।

युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्य के प्रति सक्रिय करने के लिए उन्होंने 1970 में राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना की। इसी दौर में मध्यप्रदेश के मुरैना के जौरा में महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना की। ये आश्रम उन्होंने शांति सेवा केन्द्र के रूप में स्थापित किया। रण सिंह परमार बताते हैं कि पचास-साठ के दशक में चंबल घाटी के खूंखार दस्युओं के आतंक से जहां सरकार परेशान थी, वहीं तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल पुलिस के जरिए इन पर शिकंजा कसने में लगे थे। लगभग रोज होने वाली मुठभेड़ में कभी डाकू मर रहे थे तो कभी पुलिसकर्मी शहीद हो रहे थे।

उस वक्त उन्हें लगा कि शायद सरकार का तरीका गलत है। हर रोज हो रही हिंसा जब देखी न गई तो प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलकर उन्होंने गांधीवादी तरीके से दस्युओं को समझाने का एक मौका मांगा।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण व आचार्य विनोबा भावे जैसी हस्तियों ने उन्हें प्रोत्साहित किया। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन के चार साल चंबल घाटी के दस्युओं के बीच ही बिताकर उन्हें महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित किया। डॉ. सुब्बाराव के प्रयास ही थे कि हिंसा से बदनाम हो चुकी चंबल घाटी के 654 खूंखार दस्युओं ने सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण कर समाज की मुख्य धारा में शामिल होने का फैसला किया। एक बार वे मध्य प्रदेश की चंबल घाटी में डाकुओं के बीच उन्हें समझाने गए थे। वहां डाकू आपस में ही लड़ पड़े। चारों ओर से गोलियां चल रहीं थीं। एकबारगी तो लगा किकहीं उन्हें ही कोई गोली न लग जाए।। इसी बीच एक गोली किसी अन्य आदमी को आकर लगी और वो गिर पड़ा। इस दिल दहला देने वाली घटना के बाद भी उन्होंने हौसला नहीं खोया, डाकुओं को सज्जन बनाने के लिए पूरे प्रयास किए। आखिरकार 1972 में महात्मा गांधी सेवा आश्रम में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की मौजूदगी में डाकुओं ने आत्मसमर्पण भी किया।अलग-अलग भागों में डाकुओं में युवा चेतना शिविर लगाकर बदलाव कर उन्हें आत्मसमर्पण के लिए राजी किया। कभी 50 तो कभी 20 लोगों का मन बदलता तो उनका सरकार के सामने आत्मसमर्पण करवा देते। आखिरी बार जब डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया तो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी उन्हें देखने के लिए पहुंची। इसी स्थल से राष्ट्रीय युवा योजना का जन्म हुआ। युवाओं के सैकड़ों प्रशिक्षण शिविर का गवाह है यह स्थल। यहीं से उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रस्ताव केन्द्र सरकार को दिया, जो स्वीकृत हुआ और

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) भारत सरकार के एक कार्यक्रम के रूप में उभरा। यह युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए चलाया जाता है।इस योजना के तहत, छात्र समाज के लिए काम करते हैं और समाज सेवा के गुण विकसित करते हैं।

पोशाक के लिहाज से वे भले जीवन भर खादी के हाफ पैंट और हाफ शर्ट पहनते रहे लेकिन वचारों और बर्ताव में वे पूरे गांधीवादी थे। उन्होंने गांधी और जयप्रकाश जैसा ही बेदाग जीवन जिया। उनके पूरे जीवन काल में किसी भी मुद्दे पर उन पर कभी कोई उंगली नहीं उठी और ना ही वे किसी आरोपों के घेरे में कभी आए। उनकी कथनी और करनी एक थी। उनके जीवन का एक एक पल पारदर्शी था।

सुब्बाराव का जन्म बैंगलुरू में 7 फरवरी 1929 को हुआ।उनका परिवार स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा हुआ था। उनके पिता वकील थे। वे स्कूली जीवन से सामाजिक कार्यों से जुड़ गए थे। मल्लेश्वरम बंगलोर के रामकृष्ण वेदांत मंदिर में 10 वर्ष की उम्र से ही वे गीता और उपनिषद के भक्ति गीतों का गायन करते थे। बहुत कम उम्र में ही वे गांधी जी से प्रभावित हो गए थे और भारत छोड़ो आंदोलन मे कूद पड़े थे उसके बाद वे वापस कभी नहीं मुड़े। वे गांधी के बताए रास्ते पर चलते ही गए और चलते फिरते ही वे इस दुनिया से सदा के लिए चले गए। बहुत कम लोगों को इतनी लंबी जिंदगी जीने का मौका मिलता है।

महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने खादी पहनना शुरू किया था। 9 अगस्त 1942 को ब्रिटिश विरोधी नारे लगाने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। वे राष्ट्रीय कांग्रेस सेवा दल के सदस्य उसी समय बन गए और मजदूरों के क्षेत्र में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केंद्र आरंभ किया। सन् 1948 में चित्रदुर्ग शिविर के दौरान वे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक नेता डॉ. हार्डिकर के संपर्क में आए। डॉ. हार्डिकर के कहने पर वे सन 1951 में अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल का काम करने दिल्ली आ गए। तब तक उन्होंने कानून की डिग्री हासिल कर ली थी। कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए पूरे देश में उन्होंने कैडर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के अन्य बड़े नेता उनकी संगठन कुशलता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सोवियत संघ, अफ्रीका,घाना सहित दुनियां के कई देशों में युवा प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व किया। 1970 में ही उन्हें गांधी शांति प्रतिष्ठान का आजीवन सदस्य बनाया गया। वे गांधी शताब्दी समारोह की जनसंपर्क उपसमिति के सचिव नियुक्त हुए। गांधी दर्शन रेल की परिकल्पना डॉ. सुब्बाराव की ही थी। उन्हें इस परियोजना का निदेशक नियुक्त किया गया। 1979-1980 में यह रेल उनके निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे देश में गयी। विलक्षण प्रतिभा के धनी भाईजी संविधान द्वारा मान्य 18 भाषाओं में बात करने और गायन की क्षमता रखते थे।

फिर 1993-94-95, में उन्होंने भारत सरकार के सहयोग से सद्भावना रेल यात्रा आयोजित की जिसने भारत की हर दिशा में भ्रमण किया। देश के 26 प्रदेशों और कुछ बाहर के 4500 पुरुष और महिलाएं बारी-बारी से पूरे समय व अल्पकाल के लिए एक साथ रहे, जबकि उनकी भाषाएं, धार्मिक विश्वास, राजनीतिक विचार, सामाजिक परिपत्र में काफी भिन्नता थी। उनका मिशन था- प्रेम, मित्रता, सांप्रदायिक सद्भावना और शांति का संदेश फैलाना।

एक यायावार की तरह उन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण किया। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, कनाडा,सिंगापुर आदि देशों में उन्होंने गांधी युवा क्रान्तिकारी शिविरों का संचालन किया। 1960 में अफ्रीका में युवा सम्मेलन में भाग लिया। 'सर्व धर्म विश्व संसद' शिकागो में स्वामी विवेकानंद के भाषण के शताब्दी समारोह के मौके पर भाई जी ने1993 में वार्ता प्रस्तुत की। उन्होंने 1999 में दक्षिण अफ्रीका में हुए सर्वधर्म विश्व सांसद सम्मेलन में भी भाग लिया।

पद्मश्री से सम्मानित डॉ सुब्बा राव महात्मा गांधी पुरस्कार, जमनालाल बजाज पुरस्कार रचनात्मक कार्य, राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार,राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भावना पुरस्कार,विश्व मानवाधिकार प्रोत्साहन पुरस्कार, राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से पुरस्कृत किए जा चुके हैं।

पिछले साल जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा चिरयुवा डॉ. एस. एन. सुब्बाराव (भाई जी) को मानद डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता सेनानी होते हुए भी उन्होंने कभी पेंशन की मांग नहीं की। उनकी हिम्मत की दाद देनी होगी कि उत्तरकाशी के भयंकर भूकंप में अपने 300 साथियों के साथ सहायता कार्य करते हुए कड़ाके की सर्दी में भी वे खादी के वस्त्र ही पहने रहे। वे आजीवन युवा शिविर आयोजित करते रहे। डॉ. एसएन सुब्बाराव जीवन भर अपनी सक्रियता से राष्ट्र की एकता अखंडता की अंतरधार को उष्मा देते रहे,वहीं उनसे प्रेरित होकर जुड़े युवा समूह शांति, प्रेम और राष्ट्र निर्माण के काम में लगे हुए हैं। 27 अक्टूबर 2021 को जयपुर में वे ब्रह्मलीन हो गए। उनको गुजरे तीन साल हो गए। स्व. सुब्बाराव की कर्मस्थली जौरा रहा है, यहां उन्होंने गांधी सेवा आश्रम की नींव रखी, जिसमें उनका समाधि स्थल बनाया गया है। उनकी तीसरी पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए देशभर के युवाओं का समागम होगा। जो भाई जी कामना शांति और सद्भावना के संदेश को पूरी दुनिया में फैलाएंगे।

अटल के सपने का लेखक

राजपथ
हिन्दी दैनिक
लखनऊ, रविवार, 27 अक्टूबर 2024

मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान डॉ.एसएन सुब्बाराव

वे गांधीवादी सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक पुरुष थे। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता की, मूल्यों की, गैरराजनीति की, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने की या सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने के आदर्श मूल्यों की प्रेरणा था। सुब्बारावजी ने आठ दशक तक सक्रिय सार्वजनिक गांधीवादी जीवन जिया, उनका जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान है। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे। सार्वजनिक जीवन भी में बेदाग, विचारों में निडर, टूटते मूल्यों में अडिग, घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित।

(कुमार कृष्णन -विनायक फीचर्स)

'देश की ताकत नौजवान, देश की दौलत नौजवान, देश की हिम्मत नौजवान, देश की इज्जत नौजवान, नौजवान जिन्दाबाद यह नारा है प्रसिद्ध गांधीवादी डॉ. एसएन सुब्बाराव का। डॉ. एस एन सुब्बाराव नाम है उस व्यक्तित्व का जो आजीवन शांति के लिए, अमन के लिए और भाईचारा के लिए प्रयासरत रहे। वे राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत के नाम से पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रहे।

मेरी उनसे पहली मुलाकात इसी कड़ी में हुई। 24 अक्टूबर 1989 को शुरू हुआ भागलपुर दंगा देश के इतिहास का बदनुमा दाग था। जिसे याद कर आज भी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। तब सरकारी आंकड़े में पहले 1070 फिर बाद में 1161 लोगों के मारे जाने की बात कही गई। जबकि जस्टिस शमसुल हसन और आरएन प्रसाद कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार 1852 लोग मारे गए थे। डॉ एस एन सुब्बाराव का भागलपुर आगमन अमन के पैगाम को लेकर था। दंगाग्रस्त इलाकों में उनकी यात्राएं हुई। नुक्कड़ सभा हुई। सभा के अंत में बाल कवि बैरागी के लिखे गीत - 'नौजवान आओ रे, नौजवान गाओ रे/ लो कदम बढ़ाओ रे/ लो कदम उठाओ रे / नौजवान आओ रे/एक साथ बढ़ चलो, मुश्किलों से लड़ चलो/इस महान देश को नया बनाओ रे /धर्म की दुहाइयाँ, प्रांत की जुदाइयाँ/भाषा की लड़ाइयाँ, पाट दो ये खाइयाँ ' जब डॉ. एसएन सुब्बाराव गाते थे तो उनके मुख से गीत के बोल निकलते ही साथ के लोग डॉ. राव के स्वर में स्वर मिलाकर गीत को दुहराने लगते थे। इसके बाद नारा लगता-' जोड़ो जोड़ो भारत जोड़ो, नफरत छोड़ो।' डॉ एसएन सुब्बाराव की भागलपुर यात्रा के साक्षी रहे हैं अनिल किशोर सहाय। वे उस दौर में भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी थे। भागलपुर का नयाबाजार मुहल्ला दंगे से प्रभावित था। उनका कार्यालय नयाबाजार चौक पर था। उन्होंने सिर्फ खड़े होने की इजाजत मांगी और अपना अभियान प्रारंभ कर दिया। वे न सिर्फ भागलपुर आए, बल्कि सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित गोधरा, कानपुर, अलीगढ़ अहमदाबाद, मुंबई, जयपुर गौहाटी ,बनारस, जम्मू आदि जगहों पर हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में सद्भावना और शांति का मरहम लगाया। आजीवन उन्होंने गांधी के विचारों का न सिर्फ प्रचार किया बल्कि उसे धारण किया और अपनी जीवन शैली और कार्यक्रमों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जबकि गांधी के नाम पर नौटंकी कर लोग आत्ममुग्ध हैं। इसके ठीक उलट वे व्यक्तिगत प्रचार से दूर रहे।

वे गांधीवादी सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक पुरुष थे। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता की, मूल्यों की, गैरराजनीति की, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने की या सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने के आदर्श मूल्यों की प्रेरणा था। सुब्बारावजी ने आठ दशक तक सक्रिय सार्वजनिक गांधीवादी जीवन जिया, उनका जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान है। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे। सार्वजनिक जीवन भी में बेदाग, विचारों में निडर, टूटते मूल्यों में अडिग, घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। रचनात्मक कार्यकर्ता बनाने का कठिन सपना गांधीजी का था, लेकिन सुब्बाराव ने रचनात्मक मानस के युवाओं को जोड़ने का अनूठा काम किया। उनके पास युवकों के साथ काम करने का गजब हुनर था। उनके इन्हीं मूल्यों ने आकर्षित किया।

उनसे दूसरी मुलाकात वर्ष 1994 में हुई जब वे सद्भावना रेल यात्रा के दौरान भागलपुर आए थे। साथ में युवाओं की टोली। प्रवास के दौरान साईकिल यात्रा। अनेक कार्यक्रम। रामरतन चूड़ीवाला बताते हैं कि वे कहते थे - 'युवा एक घंटा देह और एक घंटा देश सेवा मे लगाएं। दिग्भ्रमित युवाओं को रचनात्मक दिशा से

जोड़कर हमें जागरूक जनता तक एकता की अहमियत का संदेश देने की आवश्यकता है। हमें युवाओं को आत्मविश्वासी बनाना है। ईश्वरीय प्रारूप में समस्त जन-अनुपम ऊर्जा के स्रोत हैं। आप गंदगी हटाने में, पड़ोसी निरक्षर को पढ़ाने में, एक पौधा लगाकर उसे पानी देकर आप राष्ट्र की सेवा में योगदान कर सकते हैं। हमारे रहते आसपास हिंसा न हो, कोई भूखा न सोया हो, नशा नाश की जड़ है इसलिए देश समाज नशा मुक्त हो, नशे की आदत को मालिक न बनने दें उस आदत को गुलाम बनाएं तथा भ्रष्टाचार पर पूर्णतः लगाम कसकर समाज को स्वर्ग बनाना संभव है।

युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्य के प्रति सक्रिय करने के लिए उन्होंने 1970 में राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना की। इसी दौर में मध्यप्रदेश के मुरैना के जौरा में महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना की। ये आश्रम उन्होंने शांति सेवा केन्द्र के रूप में स्थापित किया। रण सिंह परमार बताते हैं कि पचास-साठ के दशक में चंबल घाटी के खूंखार दस्युओं के आतंक से जहां सरकार परेशान थी, वहीं तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल पुलिस के जरिए इन पर शिकंजा कसने में लगे थे। लगभग रोज होने वाली मुठभेड़ में कभी डाकू मर रहे थे तो कभी पुलिसकर्मी शहीद हो रहे थे।

उस वक्त उन्हें लगा कि शायद सरकार का तरीका गलत है। हर रोज हो रही हिंसा जब देखी न गई तो प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलकर उन्होंने गांधीवादी तरीके से दस्युओं को समझाने का एक मौका मांगा।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण व आचार्य विनोबा भावे जैसी हस्तियों ने उन्हें प्रोत्साहित किया। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन के चार साल चंबल घाटी के दस्युओं के बीच ही बिताकर उन्हें महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित किया। डॉ. सुब्बाराव के प्रयास ही थे कि हिंसा से बदनाम हो चुकी चंबल घाटी के 654 खूंखार दस्युओं ने सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण कर समाज की मुख्य धारा में शामिल होने का फैसला किया। एक बार वे मध्य प्रदेश की चंबल घाटी में डाकुओं के बीच उन्हें समझाने गए थे। वहां डाकू आपस में ही लड़ पड़े। चारों ओर से गोलियां चल रहीं थीं। एकबारगी तो लगा कि कहीं उन्हें ही कोई गोली न लग जाए।। इसी बीच एक गोली किसी अन्य आदमी को आकर लगी और वो गिर पड़ा। इस दिल दहला देने वाली घटना के बाद भी उन्होंने हौसला नहीं खोया, डाकुओं को सज्जन बनाने के लिए पूरे प्रयास किए। आखिरकार 1972 में महात्मा गांधी सेवा आश्रम में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की मौजूदगी में डाकुओं ने आत्मसमर्पण भी किया। अलग- अलग भागों में डाकुओं में युवा चेतना शिविर लगाकर बदलाव कर उन्हें आत्मसमर्पण के लिए राजी किया। कभी 50 तो कभी 20 लोगों का मन बदलता तो उनका सरकार के सामने आत्मसमर्पण करवा देते। आखिरी बार जब डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया तो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी उन्हें देखने के लिए पहुंची। इसी स्थल से राष्ट्रीय युवा योजना का जन्म हुआ। युवाओं के सैकड़ों प्रशिक्षण शिविर का गवाह है यह स्थल। यहीं से उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रस्ताव केन्द्र सरकार को दिया, जो स्वीकृत हुआ और

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) भारत सरकार के एक कार्यक्रम के रूप में उभरा। यह युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए चलाया जाता है इस योजना के तहत, छात्र समाज के लिए काम करते हैं और समाज सेवा के गुण विकसित करते हैं।

पोशाक के लिहाज से वे भले जीवन भर खादी के हाफ पेंट और हाफ शर्ट पहनते रहे लेकिन विचारों और बर्ताव में वे पूरे गांधीवादी थे। उन्होंने गांधी और जयप्रकाश जैसा ही बेदाग जीवन जिया। उनके पूरे जीवन काल में किसी भी मुद्दे पर उन पर कभी कोई उंगली नहीं उठी और ना ही वे किसी आरोपों के घेरे में कभी आए। उनकी कथनी और करनी एक थी। उनके जीवन का एक एक पल पारदर्शी था।

सुब्बाराव का जन्म बेंगलुरू में 7 फरवरी 1929 को हुआ। उनका परिवार स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा हुआ था। उनके पिता वकील थे। वे स्कूली जीवन से सामाजिक कार्यों से जुड़ गए थे। मल्लेश्वरम बंगलोर के रामकृष्ण वेदांत मंदिर में 10 वर्ष की उम्र से ही वे गीता और उपनिषद के भक्ति गीतों का गायन करते थे। बहुत कम उम्र में ही वे गांधी जी से प्रभावित हो गए थे और भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े थे उसके बाद वे वापस कभी नहीं मुड़े। वे गांधी के बताए रास्ते पर चलते ही गए और चलते फिरते ही वे इस दुनिया से सदा के लिए चले गए। बहुत कम लोगों को इतनी लंबी जिंदगी जीने का मौका मिलता है।

महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने खादी पहनना शुरू किया था। 9 अगस्त 1942 को ब्रिटिश विद्रोही नारे लगाने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। वे राष्ट्रीय कांग्रेस सेवा दल के सदस्य उसी समय बन गए और मजदूरों के क्षेत्र में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केंद्र आरंभ किया। सन 1948 में चित्रदुर्गा शिविर के दौरान वे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक नेता डॉ. हार्डिकर के संपर्क में आए। डॉ. हार्डिकर के कहने पर वे सन 1951 में अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल का काम करने दिल्ली आ गए। तब तक उन्होंने कानून की डिग्री हासिल कर ली थी। कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए पूरे देश में उन्होंने कैडर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के अन्य बड़े नेता उनकी संगठन कुशलता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सोवियत संघ, अफ्रीका, घाना सहित दुनिया के कई देशों में युवा प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व किया। 1970 में ही उन्हें गांधी शांति प्रतिष्ठान का आजीवन सदस्य बनाया गया। वे गांधी शताब्दी समारोह की जनसंपर्क उपसमिति के सचिव नियुक्त हुए। गांधी दर्शन रेल की परिकल्पना डॉ. सुब्बाराव की ही थी। उन्हें इस परियोजना का निदेशक नियुक्त किया गया। 1979-1980 में यह रेल उनके निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे देश में गयी। विलक्षण प्रतिभा के धनी भाईजी संविधान द्वारा मान्य 18 भाषाओं में बात करने और गायन की क्षमता रखते थे।

फिर 1993-94-95, में उन्होंने भारत सरकार के सहयोग से सद्भावना रेल यात्रा आयोजित की जिसने भारत की हर दिशा में भ्रमण किया। देश के 26 प्रदेशों और कुछ बाहर के 4500 पुरुष और महिलाएं बारी-बारी से पूरे समय व अल्पकाल के लिए एक साथ रहे, जबकि उनकी भाषाएं, धार्मिक विश्वास, राजनीतिक विचार, सामाजिक परिपत्र में काफी भिन्नता थी। उनका मिशन था- प्रेम, मित्रता, सांप्रदायिक सद्भावना और शांति का संदेश फैलाना।

एक यायावार की तरह उन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण किया। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, कनाडा, सिंगापुर आदि देशों में उन्होंने गांधी युवा क्रान्तिकारी शिविरों का संचालन किया। 1960 में अफ्रीका में युवा सम्मेलन में भाग लिया। 'सर्व धर्म विश्व संसद' शिकागो में स्वामी विवेकानंद के भाषण के शताब्दी समारोह के मौके पर भाई जी ने 1993 में वार्ता प्रस्तुत की।

भाईजी डॉ एस एन सुब्बाराव : ऐसे व्यक्ति मरते नहीं

रमेश चंद्र शर्मा

शब्द, बोल, विचार, सर्व धर्म प्रार्थना, गीत संगीत, अच्छे कर्म, साधना, मौन, श्रम कभी मरते नहीं है। कभी विविध कारण से धुंधले या मंद पड़ सकते है मगर जिंदा रहते है। समय के साथ वे फलते फूलते रहते है। लोगों की वाणी में, कंठो में, विचारों में, यादों में, इतिहास में, दिलों में, दिमाग में आते रहते है, गूंजते हैं, उभरते हैं, फलते फूलते, फूटते हैं झरने की तरह।

सहज सरल सुलभ सादा साझा जीवन-

भाईजी के पास यह सब बहुत सहजता, सरलता, स्पष्टता के साथ उनका अंग बन गया। सोते-जागते, आते-जाते, उठते-बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, सोचते-विचारते, कथनी-करनी में यह साफ झलकता रहता, स्वच्छ हवा, पानी की तरह सबको सहज उपलब्ध। एक चुंबकीय क्षेत्र बनाता था जिसका आकर्षण अपनी ओर खींचता है। जिन खोजा तिन पाईया।

सबै भूमि गोपाल की-

उनका जीवन एक नदी की तरह रहा जो सदैव सक्रिय रहती है। चाहे पहाड़ हो या धरातल, ऊंचाई हो या ढलान, गांव हो या शहर, बस्ती हो या जंगल, देश हो या विदेश, बंगलौर, दिल्ली हो या चंबल, सुनसान हो या भीड़ वही स्वभाव, निडरता, पहनावा, सक्रियता, शांति, सौहार्द साझापन, सद्भावना, श्रमदान, सर्व धर्म प्रार्थना, गीत, खेल भारत से लेकर अमेरिका तक।

सबके भाईजी-

हर आयु वर्ग, स्थान से भाईजी संपर्क, संवाद साधने की विशेष क्षमता रखते थे, चाहे गांव की सभा हो या संयुक्त राष्ट्र संघ। एक तरफ बच्चों के लिए जेब से गुब्बारा निकलना, किशोर, युवा जवान, अधेड़ आयु के लिए गीत, खेल, श्रम, संदेश। जिसके लिए जो सार्थक, उपयोगी उसकी समझ, क्षमता के अनुसार उसके सामने रखना।

संवाद संपर्क की व्यापकता-

संवाद, संपर्क में इतनी व्यापकता की आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास भाईजी का लिखा हुआ निवास, शिविर, सभा, सम्मेलन, प्लेटफार्म, रेल, प्रवास से लिखा हुआ पत्र, अन्तर्देशीय पत्र, पोस्ट कार्ड आसानी से मिल जाएगा। आजकल फोन करके हालचाल पूछते, बात करते।

हर परिवार अपना परिवार-

जवानी में आह्वान पर अपना बंगलौर का घर छोड़कर दिल्ली आए मगर देश दुनिया में इतने घर बन गए कि आज सब की गिनती करना कठिन है।

व्यक्ति नहीं समूह/संगठन-

डॉ एस एन सुब्बाराव अपने आप में किसी समूह, संगठन से ज्यादा प्रभावी, व्यापक रहे। उन्होंने राष्ट्रीय युवा योजना नामक संगठन बनाया। भाईजी के स्वभाव के कारण यह संगठन कम परिवार के रूप में ज्यादा विकसित हुआ। इसकी यह बड़ी विशेषता है। ना सदस्यता रजिस्टर, ना सदस्यता शुल्क, ना विशेष बंधन, शर्तें एक व्यापक सोच समझ विचार लिए परिवार की तरह सबके लिए खुले दरवाजे। सबका स्वागत, सब अपने कोई पराया नहीं।

लोग जुड़ते गए और कारवां बनता गया-

छात्र जीवन में शामिल, कांग्रेस सेवा दल में शामिल (राष्ट्रीय मुख्य संगठक), गांधी शांति प्रतिष्ठान के आजीवन सदस्य, गांधी शताब्दी में बड़ी लाइन, छोटी लाइन में चली गांधी दर्शन रेलगाड़ी में निदेशक के रूप में शामिल, महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना, चंबल शांति मिशन तथा समिति, शिविर में शामिल, चंबल शांति कार्य एवं पुनर्वास में शामिल, अंतर भारती के कार्यक्रम, बाल महोत्सव, बाल मेला, राष्ट्रीय युवा योजना में शामिल,भारत जोड़ो में शामिल, सद्भावना रेल के माध्यम से देश भर में जागरूकता फैलाना, भाईजी व्यापक संपर्क, संवाद में शामिल, विभिन्न गतिविधियों में शामिल, सभा, सम्मेलनों, बैठकों, कार्यक्रमों में शामिल साथी जुड़ते गए और कारवां बनता गया। भाईजी जहां पहुंचे वहीं उनसे परिवार जुड़ते जाते और भाईजी का परिवार और विस्तृत, व्यापक हो जाता। सभी भाईजी को अपने समीप पाते, अपनापन महसूस करते, सबके भाईजी।

महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा-

महात्मा गांधी सेवा आश्रम की जौरा, मुरैना, चंबल, मध्यप्रदेश में स्थापना अपने गांधी शताब्दी रेल के साथियों से मिलकर की। प्रारम्भिक काल में सबसे ज्यादा समय श्री पी वी राजगोपाल ने आश्रम में बिताया तथा बाद में श्री रणसिंह परमार ने कमान संभाली जो आज भी सक्रियता, समर्पण, संकल्प, स्पष्टता, निष्ठा से अपनी साधना में लीन है।

बागी पुनर्वास-

बागी पुनर्वास एक बड़ा महत्वपूर्ण कार्य रहा। बागी परिवारों से संबंध उनकी देखभाल। खुली जेल में बागियों से मिलना, उनकी समस्याओं का समाधान करना, करवाना कोई आसान काम नहीं रहा। विभिन्न विभागों से संबंधित कार्य को साधना।

वकील ही वकील-

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से लेकर भाईजी तक वकीलों की एक बड़ी श्रृंखला, जमात है जिसने आजादी की लड़ाई से लेकर राष्ट्र रचना, निर्माण के लिए अपना सर्वस्व समर्पण, न्यौछावर कर दिया। देश के लिए जीए और देश के लिए मरे। सबके नाम लिखने लगूं तो कितने ही पन्ने, पेज भर जाएंगे। इनमें से अधिकांश वे है जिन्होंने न्यायालय की अदालत के बजाय जन जन में न्याय, समता, एकता, शांति, सद्भावना, सौहार्द, एकजुटता, रचना, निर्माण, जागरूकता करने के लिए अपने को खपाया। बदला नहीं बदलाव चाहिए के लिए काम किया। शांति, अहिंसा, करुणा, प्रेम से बदलाव लाए।

नौजवान आओ रे-

नए समाज की रचना में तरुणाई का योगदान।

किसी भी समाज, देश में बदलाव की असली ताकत युवा पीढ़ी होती है। भाईजी ने युवाओं को दिशा देने, उनकी दशा सुधारने के लिए सतत प्रयास किए। युवाओं को रचना, निर्माण से जोड़ा।

बाल महोत्सव, बाल मेला-

बाल मेले, बाल महोत्सव के माध्यम से बालपन में ही बच्चों को शांति, एकसाथ रहने, रचना, निर्माण, सद्भावना के लिए संस्कारित करना। कहानी किस्से, गीत, नाटक, भाषण, अंताक्षरी, खेल, चित्रकला, पेपर कार्य, मिट्टी कार्य, भिन्न-भिन्न भाषा सीखना जैसे विभिन्न कलाकारी के अवसर प्रदान करना। अलग-अलग घरों में रहना। विविधता में एकता का संदेश। भाईजी स्वयं अनेक भाषा समझते बोलते, जानते थे।

भारत की संतान-

भारत की संतान गीत के माध्यम से जिसमें विभिन्न भाषा सुनने का अवसर मिलता, एकता, मिलकर रहने, अनेकता में एकता का संदेश प्रवाहित होता।

भाईजी की कामना सद्भावना-

देश में कहीं भी हिंसा, मारपीट, दंगा फिसाद हुआ। भाईजी के आह्वान पर, उनके नेतृत्व में सैकड़ों युवा, साथी शांति, सद्भावना के लिए पहुंच जाते। कश्मीर से कन्याकुमारी, अरुणाचल से द्वारका अर्थात पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण। इसमें अण्डमान निकोबार, लक्षद्वीप जैसे स्थान भी शामिल है।

ऐसे व्यक्ति का पंचतत्व का भौतिक शरीर जाता है। उसका विचार, चिंतन, मनन, संस्कार, काम अनेक लोगों में रम, बस जाता है जो आगे चलता रहता है। अब भी भाईजी ऐसे जिंदा है, जिंदा रहेंगे। आओ मिलकर आगे कदम उठाए, बढ़े, बिना रुके, बिना झुके भाई सुब्बाराव अपने साथ है। उनका नेतृत्व अब और ज्यादा व्यापक हो गया है। अब भाईजी से मिलने कहीं नहीं जाना पड़ेगा, जहां है वहीं भाईजी का नेतृत्व उपलब्ध है। समझें सोचें अपनाएं और पहले से अधिक, ज्यादा सक्रियता, सावधानी, सतर्कता, समझदारी, संकल्प, समर्पण, स्पष्टता, उत्साह, हिम्मत से पतवार संभालें।

त्याग और प्रेम के पथ पर चलकर मूल ना कोई हारा, हिम्मत से पतवार संभालो फिर क्या दूर किनारा।

नौजवान आओ रे, नौजवान गाओ रे,
लो कदम मिलाओ रे, लो कदम बढ़ाओ रे।
जय जगत पुकारे जा, सर अमन पर वारे जा,
सबके हित के वास्ते, अपना सुख बिसारे जा।

भाईजी की स्मृति को हार्दिक सादर जय जगत। भाईजी के विचार आज भी जिंदा है, आगे भी रहेंगे। उनके प्रति श्रद्धा विश्वास निष्ठा संकल्प से समर्पित साथी इस धारा को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होंगे। भाईजी का नारा, एकजुटता, भाईचारा।

मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान डॉ.एसएन सुबाराव

(कुमार कृष्णन -विनायक फीचर्स)

देश की ताकत नौजवान, देश की दौलत नौजवान,देश की हिम्मत नौजवान, देश की इज्जत नौजवान , नौजवान जिन्दाबाद यह नारा है प्रसिद्ध गांधीवादी डॉ. एसएन सुब्बाराव का। डॉ. एस एन सुब्बाराव नाम है उस व्यक्तित्व का जो आजीवन शांति के लिए,अमन के लिए और भाईचारा के लिए प्रयासरत रहे। वे राष्ट्रीय एकता के आग्रदूत के नाम से पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रहे।

मेरी उनसे पहली मुलाकात इसी कड़ी में हुई। 24 अक्टूबर 1989 को शुरू हुआ भागलपुर दंगा देश के इतिहास का बदनुमा दाग था। जिसे याद कर आज भी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते है। तब सरकारी आंकड़े में पहले 1070 फिर बाद में 1161 लोगों के मारे जाने की बात कही गई। जबकि जस्टिस शमसुल हसन और आरएन प्रसाद कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार 1852 लोग मारे गए थे। डॉ एस एन सुब्बाराव का भागलपुर आगमन अमन के पैगाम को लेकर था। दंगाग्रस्त इलाकों में उनकी यात्राएं हुई। नुक्कड़ सभा हुई। सभा के अंत में बाल कवि बैरागी के लिखे गीत -

नौजवान आओ रे, नौजवान गाओ रे/ लो क़दम बढ़ाओ रे/ लो क़दम उठाओ रे / नौजवान आओ रे/एक साथ बढ़ चलो, मुश्किलों से लड़ चलो/ इस महान देश को नया बनाओ रे /धर्म की दुहाइयाँ, प्रांत की जुदाइयाँ/भाषा की लड़ाइयाँ, पाट दो ये खाइयाँ % जब डॉ. एसएन सुब्बाराव गाते थे तो उनके मुख से गीत के बोल निकलते ही साथ के लोग डॉ. राव के स्वर में स्वर मिलाकर गीत को दुहराने लगते थे। इसके बाद नारा लगता- जोड़ो जोड़ो भारत जोड़ो, नफरत छोड़ो। डॉ एसएन सुब्बाराव की भागलपुर यात्रा के साक्षी रहे है अनिल किशोर सहाय। वे उस दौर में भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी थे। भागलपुर का नयाबाजार मुहल्ला दंगे से प्रभावित था। उनका कार्यालय नयाबाजार चौक पर था। उन्होंने सिर्फ खड़े होने की इजाजत मांगी और अपना अभियान प्रारंभ कर दिया। वे न सिर्फ भागलपुर आए, बल्कि सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित गोधरा, कानपुर, अलीगढ़ अहमदाबाद, मुंबई , जयपुर गौहाटी ,बनारस, जम्मू आदि जगहें पर हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में सद्भावना और शांति का मरहम लगाया। आजीवन उन्होंने गांधी के विचारों का न सिर्फ प्रचार किया बल्कि उसे धारण किया और अपनी जीवन शैली और कार्यक्रमों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जबकि गांधी के नाम पर नौटंकी कर लोग आत्ममुग्ध है। इसके ठीक उलट वे व्यक्तिगत प्रचार से दूर रहे। वे गांधीवादी सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक पुरुष थे। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता की, मूल्यों की, गैरराजनीति की, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने की या सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने के आदर्श मूल्यों की प्रेरणा था।

सुब्बारावजी ने आठ दशक तक सक्रिय सार्वजनिक गांधीवादी जीवन जिया, उनका जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की प्रेरक दास्तान है। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे। सार्वजनिक जीवन भी में बेदाग, विचारों में निडर,टूटते मूल्यों में अडिग, घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। रचनात्मक कार्यकर्ता बनाने का कठिन सपना गांधीजी का था, लेकिन सुब्बाराव ने रचनात्मक मानस के युवाओं को जोड़ने का अनूठा काम किया। उनके पास युवकों के साथ काम करने का गजब हुनर था। उनके इन्हीं मूल्यों ने आकर्षित किया।

उनसे दूसरी मुलाकात वर्ष 1994 में हुई जब वे सद्भावना रेल यात्रा के दौरान भागलपुर आए थे। साथ में युवाओं की टोली। प्रवास के दौरान साईकिल यात्रा। अनेक कार्यक्रम। रामरतन चूड़ीवाला बताते है कि वे कहते थे -

%युवा एक घंटा देह और एक घंटा देश सेवा में लगाएं। दिग्भ्रमित युवाओं को रचनात्मक दिशा से जोड़कर हमें जागरूक जनता तक एकता की अहमियत का संदेश देने की आवश्यकता है। हमें युवाओं को आत्मविश्वासी बनाना है। ईश्वरीय प्रारूप में समस्त जन-अनुपम ऊर्जा के स्रोत है। आप गंदगी हटाने में, पड़ोसी निरक्षर को पढ़ाने में, एक पौधा लगाकर उसे पानी देकर आप राष्ट्र की सेवा में योगदान कर सकते है। हमारे रहते आसपास हिंसा न हो, कोई भूखा न सोया हो, नशा नाश की जड़ है इसलिए देश समाज नशा मुक्त हो, नशे की आदत को मालिक न बनने दें उस आदत को गुलाम बनाएं तथा भ्रष्टाचार पर पूर्णत: लगाम कसकर समाज को स्वर्ग बनाना संभव है। युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्य के प्रति सक्रिय करने के लिए उन्होंने 1970 में राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना की। इसी दौर में मध्यप्रदेश के मुरैना के जौरा में महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना की। ये आश्रम उन्होंने शांति सेवा केन्द्र के रूप में स्थापित किया। रण सिंह परमार बताते हैं कि पचास-साठ के दशक में चंबल घाटी के खूंखार दस्युओं के आतंक से जहां सरकार परेशान थी, वहीं तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल पुलिस के जरिए इन पर शिकंजा कसने में लगे थे। लगभग रोज होने वाली मुठभेड़ में कभी डाकू मर रहे थे तो कभी पुलिसकर्मी शहीद हो रहे थे। उस वक्त उन्हें लगा कि शायद सरकार का तरीका गलत है। हर रोज हो रही हिंसा जब देखी न गई तो प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलकर उन्होंने गांधीवादी तरीके से दस्युओं को समझाने का एक मौका मांगा।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण व आचार्य विनोबा भावे जैसी हस्तियों ने उन्हें प्रोत्साहित किया। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन के चार साल चंबल घाटी के दस्युओं के बीच ही बिताकर उन्हें महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित किया। डॉ. सुब्बाराव के प्रयास ही थे कि हिंसा से बदनाम हो चुकी चंबल घाटी के 654 खूंखार दस्युओं ने सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण कर समाज की मुख्य धारा में शामिल होने का फैसला किया। एक बार वे मध्य प्रदेश की चंबल घाटी में डाकुओं के बीच उन्हें समझाने गए थे। वहां डाकू आपस में ही लड़ पड़े। चारों ओर से गोलियां चल रही थीं। एकबारगी तो लगा किकहीं उन्हें ही कोई गोली न लग जाए।। इसी बीच एक गोली किसी अन्य आदमी को आकर लगी और वो गिर पड़ा। इस दिल दहला देने वाली घटना के बाद भी उन्होंने हौसला नहीं खोया, डाकुओं को सज्जन बनाने के लिए पूरे प्रयास किए। आखिरकार 1972 में महात्मा गांधी सेवा आश्रम में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की मौजूदगी में डाकुओं ने आत्मसमर्पण भी किया।अलग-अलग भागों में डाकुओं में युवा चेतना शिविर लगाकर बदलाव कर उन्हें आत्मसमर्पण के लिए राजी किया। कभी 50 तो कभी 20 लोगों का मन बदलता तो उनका सरकार के सामने आत्मसमर्पण करवा देते। आखिरी बार जब डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया तो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी उन्हें देखने के लिए पहुंची। इसी स्थल से राष्ट्रीय युवा योजना का जन्म हुआ। युवाओं के सैकड़ों प्रशिक्षण शिविर का गवाह है यह स्थल। यहीं से उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रस्ताव केन्द्र सरकार को दिया, जो स्वीकृत हुआ और

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) भारत सरकार के एक कार्यक्रम के रूप में उभरा। यह युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए चलाया जाता है।इस योजना के तहत, छात्र समाज के लिए काम करते हैं और समाज सेवा के गुण विकसित करते है। पोशाक के लिहाज से वे भले जीवन भर खादी के हाफ पेंट और हाफ शर्ट पहनते रहे लेकिन विचारों और बर्ताव में वे पूरे गांधीवादी थे। उन्होंने गांधी और जयप्रकाश जैसा ही बेदाग जीवन जिया। उनके पूरे जीवन काल में किसी भी मुद्दे पर उन पर कभी कोई उंगली नहीं उठी और ना ही वे किसी आरोपों के घेरे में कभी आए। उनकी कथनी और करनी एक थी। उनके जीवन का एक एक पल पारदर्शी था। सुब्बाराव का जन्म बेंगलुरू में 7 फरवरी 1929 को हुआ।उनका परिवार स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा हुआ था। उनके पिता वकील थे। वे स्कूली जीवन से सामाजिक कार्यों से जुड़ गए थे। मल्लेश्वरम बंगलोर के रामकृष्ण वेदांत मंदिर में 10 वर्ष की उम्र से ही वे गीता और उपनिषद के भक्ति गीतों का गायन करते थे। बहुत कम उम्र में ही वे गांधी जी से प्रभावित हो गए थे और भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े थे उसके बाद वे वापस कभी नहीं मुड़े।